नवागढ़ (नंदपुर)

का

इतिहास

– संकलन एवं लेखन –

हरिविष्णु अवस्थी

– सम्पादन –

ब्र. जयकुमार जैन 'निशांत'

प्रतिष्ठाचार्य

क्षेत्र अन्वेषक

प्रतिष्ठा पितामह गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प'

८ अप्रैल १९५९ में पुष्प जी ने अपने साथियों के साथ
भगवान अरनाथ स्वामी का अन्वेषण किया,
जिनकी प्राण प्रतिष्ठा करके तन-मन-धन के साथ
अपना सम्पूर्ण जीवन भी नवागढ़ (नंदपुर) के लिए समर्पित कर
स्वयं की देह को भी उसी पुण्य भूमि में समर्पित कर जीवन सार्थक किया।

नवागढ़ (नंदपुर)
का इतिहास

संकलन एवं लेखन
हरिविष्णु अवस्थी

सम्पादन
ब्र. जयकुमार जैन प्रतिष्ठाचार्य ''निशान्त''

:-प्रकाशक:-
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
श्री दिगम्बर जैन पंचवालयति मंदिर विद्यासागर नगर, ए.बी.रोड़,
इन्दौर-१० म.प्र.

कृतिः-नवागढ़ (नंदपुर) का इतिहास

संकलनः- हरिविणु अवस्थी

सम्पादक-ब्र. जयकुमार जैन ''निशान्त''

तृतीय आवृत्ति :-१००० , अक्टूबर २०१९

उपलक्ष्यः- संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के सुयोग्य शिष्य अध्यात्मयोगी मुनिश्री सरलसागरजी महाराज का मंगल चातुर्मास-२०१९

प्रकाशक :- **सेठ दयाचन्द नरेन्द्रकुमार सर्राफ, मैनवार ट्रेक्टर्स, टीकमगढ़**

प्राप्ति स्थानः-

(१) श्री दिगम्बर जैन पंचवालयति मंदिर
विद्यासागर नगर, ए.बी.रोड़, इन्दौर-१० म.प्र.
०७३१-२५७१८५१, ४००३५०६
मो.: ०८६८६५०५१०८,

(२) ब्र. जयकुमार जैन ''निशान्त''प्रतिष्ठाचार्य
पं. गुलाबचन्द्र 'पुश्प' जैन प्रतिष्ठाचार्य स्मृति समिति
पुष्प भवन, पपौरा चौराहा टीकमगढ़, म.प्र
मो.: ७९७४०१०१३४, ९४२५१४१६९७

(३) श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ, ग्राम नावई
थाना सोजना जिला- ललितपुर, उ.प्र. .२८४४०५
मो.: ९७९४३ १९७३९

मुद्रकः- मोदी प्रिन्टर्स इन्दौर मप्र. मो.: ९८२६० १६५४३

अनुक्रमणिका

१ प्रकाशकीय

२ प्राक्कथन

३ सम्पादकीय

४ नवागढ़ प्राचीन नंदपुर का उद्भव एवं विकास

५ नवागढ़ प्राचीन नंदपुर के प्रागैतिहासिक साक्ष्य

६ चंदेल शासनकाल में जैन धर्म का विकास

७ अपूरणीय क्षति

८ सन्दर्भ

प्रकाशकीय

पृथ्वी के गर्भ में यूँ तो सदैव अनेक रहस्य छुपे होते हैं लेकिन उनमें से बहुत कम ही उद्घाटित होकर हम सभी की दृष्टि का विषय बन पाते हैं। इतिहास में कभी कभार ही ऐसी घटनायें घटित होती हैं । श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़, इतिहास में घटी हुई एक ऐसी ही घटना का प्रमाण है। नंदपुर का इतिहास बहुत प्राचीन है। इस क्षेत्र पर प्रथम दृष्टि प्रतिष्ठा पितामह पं. श्री गुलाबचंद जी ''पुष्प'' टीकमगढ़ की सन् 1959 में पड़ी और दैवयोग से पंडित जी के द्वारा भगवान अरनाथ स्वामी के साथ अन्य जिनबिम्बों के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आज भी इस क्षेत्र के चारों ओर प्राचीन गौरवशाली इतिहास के साक्ष्य एवं प्रमाणिकता देने वाली सैकड़ों आधारभूत संरचनाएँ देखी जा सकती हैं। इस क्षेत्र के आस-पास विद्यमान प्राचीन गुफाएँ, पाषाण निर्मित कलाकृतियाँ, चंदेलकालीन बावड़ियाँ आदि पुरा सम्पदा इस क्षेत्र की प्राचीनता, आध्यात्मिकता और गौरवमयी संस्कृति होने का प्रमाण हैं। वर्तमान में यह क्षेत्र क्रमोन्नत विकास के पथ पर अग्रसर हो समस्त जिन प्रेमियों की आस्था का केन्द्र बनता जा रहा है और मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि आदरणीय पुष्प के कंधों का समस्त भार भाई जय निशांत न केवल प्रतिष्ठा क्षेत्र में अपितु क्षेत्र के सम्पूर्ण विकास की दृष्टि से भी वहन कर रहे हैं। क्षेत्र के इतिहास से संबंधित इस कृति का प्रकाशन कर हम गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। यह कृति जैन धर्म इतिहास, पुरातात्त्विक धरोहर, सांस्कृतिक आयामों के साथ जनमानस में नवागढ़ अतिशय क्षेत्र के प्रति जागरूकता, प्रमाणिकता और आस्था बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी। ऐसी हमारी भावना है।

ब्र. जिनेश मलैया
प्रधान सम्पादक संस्कार सागर
इन्दौर

प्राक्कथन

भारतवर्ष में बुंदेलखण्ड की परम्पराएँ, इतिहास, संस्कृति शासन व्यवस्था, शौर्य एवं धार्मिक सद्भावना सर्वविदित एवं विख्यात है। लोक परम्पराओं से आपसी सद्भावना, आत्मीयता एवं आराध्य के प्रति श्रद्धा समर्पण का भाव वृद्धिगत होता है।

सभी धर्मों का एक ही लक्ष्य है, अपने आराध्य की आराधना से आत्मशांति और सुख समृद्धि की कामना करना । सभी धर्मों का आदर एवं सम्मान करते हुये धर्माचरण हेतु मंदिरों एवं प्रतिमाओं के निर्माण की परम्परा अति प्राचीन है, जिसका शासक, श्रेष्ठी एवं प्रजाजनों का निष्ठापूर्ण इतिहास साक्षी है । काल चक्र का परिभ्रमण चलता रहता है उत्थान-पतन, यश-अपयश, प्राकृतिक अनुकूलता-प्रतिकूलता से सभी प्रभावित होते हैं। हजारों वर्ष प्राचीन शिलांकित साक्ष्य एवं जिन प्रतिमाएँ इसके जीवंत साक्षी हैं।

इतिहास में जिन महानगरों की यशोगाथा का वर्णन समृद्धशाली जीवनशैली, महलों, अट्टालिकाओं, मंदिरों, बाग- बगीचों के साथ विशेष वैभव सहित पढ़ने को मिलता है आज उनका नामोंनिशान भी नहीं हैं। ऐसे न जाने कितने नगर, मंदिर, महल पृथ्वी के गर्भ में समा गये, कोई नहीं जानता ? कालचक्र में उनका उद्भव भी समाहित है। विशेषतया जैन मंदिरों एवं प्रतिमाओं की भूगर्भ से प्राप्ति आज भी हो रही है। इसी श्रृंखला की एक कड़ी गुप्तकालीन नगर नंदपुर है, जिसकी यशोगाथा शास्त्र पुराणों या साहित्यिक रूप में उपलब्ध नहीं हैं परन्तु प्रागैतिहासिक साक्ष्यों में प्रीमेचुलियन हेण्डेक्स, शैलचित्रों, मंदिरों एवं प्रतिमाओं पर अंकित शिलालेखों तथा आसपास के नगरों एवं तीर्थ क्षेत्रों से प्राप्त शिलालेखों का सूक्ष्मता पूर्वक अध्ययन करने पर उनके बीच विशेष तारतम्यता उद्घाटित होती है।

नंदपुर वर्तमान नवागढ़ के अन्वेषण का गौरव प्रतिष्ठा पितामह पं. गुलाबचंद जी पुष्प को प्राप्त हुआ है । परन्तु इसके विकास में न जाने

कितने महापुरुषों का योगदान है, यह कल्पना से परे है। उद्‌भव से आज तक प्राप्त जानकारियों का संकलन एवं उसको कालक्रमानुसार आकार देना अत्यंत श्रमसाध्य एवं समयसाध्य है । चंदेलकालीन कृतियाँ इसका जीवन्त उदाहरण हैं ।

नंदपुर की प्राचीनता के साक्ष्य दर्पण की तरह स्पष्ट हैं । चंदेलशासक धंगदेव से मदनवर्मन के शासन काल में संस्कृति, राज्य व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था तथा सभी धर्मों के धर्मायतनों का निर्माण सुव्यवस्थित था । मदनवर्मन का आकर्षण जैन मुनियों की ओर था। उनके शासन काल में जैन मंदिरों के निर्माण में शासन का सहयोग था, वहीं श्रेष्ठियों और प्रजाजनों में उनके निर्माण की भावना भी चरम पर थी।

साहित्यिक एवं शिलालेखीय साक्ष्यों से स्पष्ट है कि ऐसे भी श्रेष्ठी परिवार थे जिन्हें राज सम्मान तो प्राप्त था ही, उनकी समृद्धि एवं समर्पण भी स्तुत्य था । एक ही वंश की विभिन्न पीढ़ियों द्वारा कई नगरों में मंदिर निर्माण एवं प्रतिमा प्रतिष्ठा कराते हुये २०० बर्षों तक इसमें संलग्न रहना, विशेष गौरव की बात है।

नदंपुर कितना समृद्धशाली, कितने विस्तार वाला, कितने मंदिरों एवं महलों से युक्त रहा होगा यह तो अतीत के गर्भ में है। उसके रहस्योद्‌घाटन में सहयेागी साहित्य के लेखकों एवं विशिष्ट स्थानों से प्राप्त शिलालेखों को प्रदान करने वाले महानुभावों का शब्दों द्वारा आभार व्यक्त करना संभव नहीं है क्योंकि उनके इस महनीय सहयोग से एक विस्मृत अतिशय क्षेत्र को देश में विशेष बहुमान, पहचान एवं स्थान प्राप्त हुआ है ।

नंदपुर, नवागढ़ में उपलब्ध चंदेल बावड़ी, मंदिर, अवशेष एवं टीलों में कितने रहस्य छिपे हैं, समय आने पर ही उद्‌घाटित होंगे और भविष्य स्वयं इसका प्रमाणिक अधिवक्ता होगा ।

हरिविष्णु अवस्थी

अवस्थी चौराहा, किले का मैदान, टीकमगढ(म.प्र.)

दूरभाष ९४०७८७३००३

संपादकीय

बुंदेलखण्ड तीर्थ क्षेत्रों से समृद्ध पावन और पवित्र धरा है, जहाँ सभी तीर्थंकरों के विशाल जिनालय जिनधर्म की यशोगाथा के साक्षी हैं । इन तीर्थ - क्षेत्रों से जहाँ धर्माचरण एवं आत्मचेतना का विकास होता है, वहीं जैन धर्म की प्राचीनता, ऐतिहासिकता एवं सांस्कृतिक समृद्धता का भी दिग्दर्शन होता है। जैन धर्म की प्राचीनता के इतिहास को अपने अंतस् में समेटे भौंयरे (तलघर) में विराजमान भगवान अरनाथ स्वामी के अतिशय से सम्पन्न नंदपुर वर्तमान नवागढ़ का अन्वेषण पं. गुलाबचंद्र जी ''पुष्प'' ककरवाहा, टीकमगढ़ (म.प्र.) द्वारा किया गया । प्रतिमाओं की प्रशस्तियों से इसकी प्राचीनता ९०० वर्ष से अधिक प्राचीन सिद्ध होती है। शिल्प कला से सातवीं सदी के साक्ष्य तथा शैलोत्कीर्ण कायोत्सर्ग मुद्रा एवं चरणचिन्ह से तीसरी सदी के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

पं. नीरज जी सतना ने इस स्थान की ऐतिहासिक उपयोगिता व्यक्त करते हुये भगवान अरनाथ स्वामी की पूजा सृजनकर भावना समर्पित की । मुनि श्री आदिसागर जी महाराज (बम्हौरी वाले) के दीर्घकालीन प्रवास एवं क्षुल्लक चिदानंदसागर जी महाराज के दो चातुर्मासों (१९६५-६६) के दौरान नंदपुर (नवागढ़) लोगों की श्रद्धा, भक्ति एवं समर्पण का केन्द्र बन गया । क्षेत्र के पदाधिकारियें एवं क्षेत्रीय समाज के सक्रिय सहयोग से विकास के विशेष आयाम स्थापित हुये। जिनसे महाव्रतियों का श्रीविहार क्षेत्र की ओर होने लगा । आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज, आचार्य श्री पद्‌मनंदी जी महाराज, आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज, आचार्य उदारसागर जी महाराज, आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज, आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज, आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज, आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज, आचार्य श्री विनिश्चयसागर जी महाराज, मुनि श्री नेमिसागर जी महाराज, मुनि श्री सुधासागर जी महाराज, मुनि श्री अभयसागर जी महाराज, मुनिश्री समयसागरजी

महाराज सहित कई मुनिसंघ एवं आर्यिका अनंतमती माता जी, विशा श्री माता जी, गुरुमती माता जी, प्रशांतमती माताजी, विनतश्री माताजी ने ससंघ दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कर इस क्षेत्र का अतिशय वर्धन कर चुके हैं।

आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज का भगवान अरनाथ स्वामी के प्रति विशेष आकर्षण रहा है। अपने प्रवासों में संयम साधना करते हुये मूलनायक के पादमूल में नवागढ़ क्षेत्र पूजा एवं सर्वसिद्धिदायक भगवान अरनाथ विधान लिपिबद्ध किया, जिसके माध्यम से श्रद्धालुजन भगवान अरनाथ की विधान पूर्वक भक्ति करते हुए, अपने संकटों का निवारण तथा मनोवांछित फल को प्राप्त करते हैं। सारस्वत कविहृदय आचार्य विभवसागर जी की लेखनी से निसृत शब्द संयोजना एवं भक्ति भावना से ओतप्रोत छन्दबद्ध पूजा एवं विधान जहाँ भक्तों को अर्हत् गुणों में तल्लीन करते हैं, वहीं क्षेत्र के इतिहास, विकास, अतिशय एवं कला का भी दिग्दर्शन कराते हैं। यथा-

श्रद्धा संयम का अनुपम गढ़, यह क्षेत्र नवागढ कहलाता ।
जैनत्व विभव का अनुपम गढ़, यह क्षेत्र नवागढ कहलाता ॥
कुछ गढ़ा गया निर्ग्रन्थों से , कुछ गढ़ा गया अरिहन्तों से ।
इतिहास यहाँ का गढ़ा गया, फिर वीतराग जिनबिम्बों से॥ १० ॥

पत्थर-पत्थर भी बोल रहे, अगणित रहस्य वह खोल रहे।
वे पुरातत्व अवषेश विशेष , इस तीरथ पर अनमोल रहे॥
आनन्दप्रदायी नंदपुरम् फिर, नावई आज नवागढ़ है।
संग्रहालय में आकर देखो, कितना अद्भुत पावनगढ़ है॥११ ॥

आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजा एवं चालीसा श्रद्धालुओं की भक्ति में विशेष सहयोगी है।

नवागढ (नंदपुर) के अतीत के रहस्य को उद्घाटित करने में श्रद्धेय पिता श्री पं. गुलाबचन्द्र जी ''पुष्प'' एवं साथी, पण्डित नीरज जी सतना,

डॉ भागचन्द ''भागेन्दु'' दमोह, डॉ. ए.पी. गौड़ लखनऊ, डॉ. स्नेहरानी जैन सागर, इंजी. एस. एम. जैन सोनीपत, डॉ. के.पी. त्रिपाठी, श्री हरिविष्णु अवस्थी टीकमगढ़, डॉ. यशवंत मलैया अमेरिका, डॉ. वी. बी. खरवड़े लखनऊ, डॉ. संजय मंजुल दिल्ली, डॉ. नारायण व्यास भोपाल, डॉ. गिरिराज आगरा, डॉ. मारूतिनंदन प्रसाद तिवारी, डॉ. एस.एस. सिन्हा वाराणसी, श्री श्रेयांस जैन ककरवाहा, श्री यशोवर्धन नायक टीकमगढ का विशेष योगदान रहा। नंदपुर नगर की स्थापना गुप्तकाल में की गयी थी । प्रतिहार काल एवं चन्देलकाल में यह विशेष नगर था । यहाँ की समृद्धि, व्यापारिक सम्पन्नता, सांस्कृतिक, पुरातात्त्विक धरोहर प्रसिद्धि को प्राप्त थी । जिनालयों का निर्माण जैन धर्मावलम्बी चंदेल शासक मदनवर्मन द्वारा मदनपुर, देवगढ़, चाँदपुर, दुधई आदि के साथ किया गया । पुरातत्त्वीय साक्ष्यों के अनुसार नंदपुर नगर में प्रथम पंचकल्याणक संवत् ११२३ (सन् १०६६ ई.) में द्वितीय पाहिल वंशज महीचन्द्र, पुत्र देल्हण द्वारा संवत् ११९५ (सन् ११३८ ई.), संवत् १२०३ ई. ११४६, संवत् २०४२ (सन् १९८५ ई.) एवं संवत् २०६९ (सन् २०११ ई.) में पंचकल्याणक प्रतिष्ठायें धर्मप्रभावना पूर्वक सम्पन्न की गयीं । दिनांक २९ जनवरी से ४ फरवरी २०१६ तक आयोजित इस पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में हम सभी को भगवान अरनाथ स्वामी की भक्ति का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। क्षेत्र के अन्वेषण, विकास, साहित्यिक अवदान में संलग्न सभी के प्रति साधुवाद , हार्दिक आभार एवं वन्दन।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के सुयोग्य शिष्य अध्यात्म योगी एकांत साधक मुनिश्री सरलसागरजी महाराज के वर्ष २०१९ के ४० वें वर्षायोग से क्षेत्र की पावनता, सामाजिक चेतना, ग्रामीणजनों को व्यसनमुक्त जीवन एवं पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा वृद्धिगत हुई ।

प्रौगैतिहासिक नवागढ़ क्षेत्र में किन्ही साधु परमेष्ठी का यह प्रथम चातुर्मास है ।

ब्र० जय कुमार ''निशान्त''

संत षिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य षिश्य अध्यात्म योगी, एकांत साधक

मुनिश्री सरलसागर जी महाराज का जीवन वृत्त

पूर्व नाम	-	महेन्द्रकुमार जैन
माता	-	श्रीमती गेंदादेवी जैन
पिता	-	श्री बाबूलाल जैन
जन्म	-	२२ अक्टूबर १९५७, नीमखेड़ा (शहपुरा भिटौनी), जबलपुर (म.प्र.)
भाई	-	एक - श्री कैलाशचंद्र जी
बहिन	-	दो - श्रीमती सुशीला, श्रीमती सुगंधी
शिक्षा	-	बी. काम. प्रथम वर्ष
ब्रह्मचर्य व्रत	-	सितम्बर १९७८
क्षुल्लक दीक्षा	-	१० जनवरी १९८० नैनागिर (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	-	१० फरवरी १९८२ बीना बारहा (म.प्र.)
मुनि दीक्षा	-	२५ सितम्बर १९८३ ईसरी (शिखरजी)
दीक्षा गुरु	-	आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज

मुनिश्री की जीवंत कृतियाँ (दीक्षित शिष्य)

१.	मुनिश्री ब्रह्मानंदसागर	२.	मुनिश्री समयसागर
३.	मुनिश्री मंगलानंदसागर	४.	मुनिश्री अनंतानंतसागर
५.	मुनिश्री समाधिसागर	६.	क्षुल्लकश्री स्वरूपानंदसागर
७.	क्षुलल्कश्री देवानंदसागर	८.	क्षुलल्कश्री दिव्यानंदसागर
९.	क्षुलल्कश्री विवेकानंदसागर		

मुनिश्री की लेखनी से नित कृतियाँ

१.	पंचकल्याणक गजरथ समीक्षा	२.	नग्नत्व समीक्षा
३.	श्रावक समीक्षा	४.	आचार्य समीक्षा
५.	निशाचर समीक्षा	६.	मुमुक्षु समीक्षा
७.	समाधि समीक्षा	८.	त्यौहार समीक्षा
९.	चातुर्मास समीक्षा	१०.	हिजड़ा
११.	प्रवचन समीक्षा	१२.	पक्षपात समीक्षा

मुनिश्री सरलसागर जी के चातुर्मास

(आचार्यश्री के विद्यासागरजी के साथ)

१९८० - नैनागिरि, १९८१- नैनागिरि (क्षुल्लक भावसागर), १९८२- , १९८३- ईसरी (शिखरजी) ऐलक भावसागर

स्वतंत्र चातुर्मास मुनि दीक्षा के बाद

१९८४-कोतमा, १९८५-पिण्डरई (मंडला), १९८६-छिंदवाड़ा, १९८७-खातेगाँव (देवास), १९८८- सिलवानी (रायसेन), १९८९-बरेली (वाड़ी), १९९०-अजनास (देवास), १९९१-बीना (इटावा), १९९२-बीना (छोटी बजरिया), १९९३-हनुमानताल (जबलपुर), १९९४-मड़िया (जबलपुर), १९९५-महाराजपुर (देवरी सागर), १९९६-देवरी (सागर), १९९७-पठारी (विदिशा), १९९८-पठारी (विदिशा), १९९९-पिड़ावा (झालावाड़), २०००-पिपरई (अशोकनगर), २००१-पिपरई (अशोकनगर), २००२पिपरई (अशोकनगर), २००३-बीना (इटावा), २००४-खिमलासा(सागर), २००५-ललितपुर, २००६-पवाजी ललितपुर, २००७-खंदारजी चंदेरी, २००८-करगुंवाजी (झांसी), २००९-बबीना (झांसी), २०१०-बड़ागाँव (टीकमगढ़), २०११-श्रुतधाम(बीना), २०१२-पचराई (शिवपुरी), २०१३- थूबौनजी (अशोकनगर), २०१४- भौंरासा (कुरवाई) विदिशा), २०१५-खिमलासा (सागर), २०१६-गोलाकोट(शिवपुरी), २०१७-बबीना (ऋषभ विहार), २०१८-बबीना (ऋषभ विहार), २०१९-नवागढ़ (ललितपुर)

चंदेल शासनकाल में जैनधर्म का विकास-

बुन्देलखण्ड के प्राचीन राजवंशों में गुप्त, कलचुरि, गुर्जर प्रतीहार एवं चन्देल राजवंश ऐसे हैं जिनके शासनकाल में इस प्रदेश का विकास हुआ सर्वाधिक विकास का श्रेय तो चंदेलों को जाता है। यही कारण है कि बुन्देलखण्ड में प्राचीनतम जैन तीर्थ जैसे सोनागिर, द्रोणगिरि, पावागिरि, देवगढ़, नवागढ़, बजरंगगढ़, कुंडलपुर, थूबोन, अहार, पपौरा, बानपुर अजयगढ़, महोवा, देलवाड़ा, चांदपुर, दुधही, कालंजर, रोनाखुर्द, बड़ागांव (धसान) आदि किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं । प्राचीनकाल से वर्तमान काल तक निर्मित जिनालयों की तो एक लम्बी श्रृंखला है। शायद ही ऐसा कोई गाँव होगा जहां जैन धर्मावलम्बी न रहते हों, और उनके द्वारा बनाये जैन मन्दिर न हो ।[७]

चंदेलवंश का आदिपुरुष चन्द्रप्रभ भगवान का इतना भक्त था कि वह उनके नाम से प्रसिद्ध हुआ और उनकी संतान चंदेल वंशी कहलायी इस वंश का प्रथम राजा नन्नुक ८३१ ई. जैनधर्मी था ।[८] महोबा उसकी राजधानी थी। अनुश्रुतियों के अनुसार चंदेल वंश के संस्थापक चन्द्रवर्मा ने १६ वर्ष की आयु में महोत्सव की स्थापना करके विशेष महोत्सव मनाया था । महोत्सवनगर का परिवर्तित रूप ही आज का महोबा है । महोबा सदियों तक चंदेलों की राजधानी रहा । वहाँ की खुदाई में मिली प्रतिमाओं से उन शासकों की जैनधर्म के प्रति श्रद्धा का संकेत मिलता है । महोबा पर हुये विनाशकारी आक्रमणों से यहाँ के महत्त्वपूर्ण भवन, मंदिर, महल आदि ध्वस्त हो गये ।[9]

इसके बाद वाक्पति राजा हुआ, इसके दो पुत्र जैजा एवं वेजा थे, जिन्होंने क्रमशः राज्य किया । इसके बाद राहिल और फिर हर्ष ९२५ ई. में राजा हुये। इनका पुत्र यशोवर्धन ९२५ से ९५४ ई. और उसका पुत्र धंग

९५४ से १००२ ई. राजा हुये । जिसके प्रथम वर्ष ९५४ ई. में खजुराहो का प्रसिद्ध पार्श्वनाथ मंदिर निर्मित हुआ। राजा धंग जैन मुनि वासवचंद्र का बड़ा भक्त था ।[10]

चंदेलों की धार्मिक सहिष्णुता , समदर्शिता तथा प्रजा वत्सलता के कारण ही उनके राज्य में विभिन्न स्थानों में विशेषतः खजुराहो एवं देवगढ़ में अन्य धर्मों के सुविशाल और भव्य मंदिरों की भाँति जैनों के भी अतिभव्य एवं कला की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट मंदिरों का निर्माण कराया जा सका । विजयपाल के यशस्वी पुत्र कीर्तिवर्मन के राज्यकाल में शांतिनाथ भगवान की मूर्ति उनके कुलामात्यवृंद पाहिल तथा जीजू जो जैनाचार्य वासवेन्दु या वासव चंद के शिष्य थे के द्वारा स्थापित करायी गई थी । पार्श्वनाथ मंदिर के शिलालेख में यद्यपि पाहिल को कुल अमात्य के रूप में उल्लिखित नहीं किया गया, तथापि उसे ' धंग राजेन मान्यः (धंग नरेश द्वारा समादृत) बतलाकर राज्य में उसकी प्रतिष्ठा की ओर महत्वपूर्ण संकेत किया गया है एवं वासवचंद्र को महाराज गुरु निरूपित किया गया है।[११] धंगदेव से पाहिल को अपूर्व सम्मान प्राप्त था ।[१२]

प्रारंभ से ही जैन दर्शन स्वतंत्र दर्शन के रूप में चला और इसमें सभी आवश्यक शास्त्रों की विशेषतायें तर्कशास्त्र और व्याकरण की रचना हुई । ज्योतिष तथा औषधि-शास्त्र में जैनियों की कुशलता ने बराबर लोक-प्रियता प्राप्त की । जैनियों की विद्या संबंधी गरिमा और ख्याति से प्रभावित होकर कितने ही प्रतिभाशाली ब्राह्मणों ने भी जैन मत ग्रहण कर लिया था । जैन धर्म को जो उर्वर क्षेत्र तथा शासकीय आश्रय दक्षिण भारत में प्राप्त हुआ, वह उस हद तक उत्तर भारत में प्राप्त नहीं हो सका। फिर भी जैन पंडितों ने उत्तरी भारत के राजपूत राजाओं के यहाँ भी प्रभाव प्रतिष्ठित करने का अधिकाधिक प्रयत्न किया ।[१३]

जैन धर्म व्यापरियों एवं व्यवसायियों के मध्य लोकप्रिय था । संभवतः इसके हिन्दु शासकों द्वारा समर्थित होने का यह भी एक कारण था और संभवतः इसी कारण वैश्यों ने काफी संख्या में जैन धर्म स्वीकार किया था, जिनका मुख्य कार्य व्यापार था। इन वैश्यों को जैन समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त थी । दण्डनायक विमल, वास्तुपाल, तेजपाल पाहिल एवं जगदु के शासन में शैव धर्मावलम्बी होने के बाद भी भोज १०१० से १०६२ ई. ने जैनधर्म एवं साहित्य को संरक्षण दिया था । भोज ने आचार्य प्रभाचंद्र के चरणों की वंदना की थी ।[१४] खजराहो के जैन मंदिरों (पार्श्वनाथ, घंटाई आदिनाथ) के अतिरिक्त चंदेल राज्य में सर्वत्र प्राप्त होने वाली जैन मूर्तियाँ एवं मंदिर भी उनके जैन धर्म के प्रति उदार दृष्टिकोण की पुष्टि करते हैं । शिव और विष्णु के मंदिरों के बगल में जिननाथ और पार्श्वनाथ मंदिर बनाने तक की स्वतंत्रता उन्होंने प्रदान की ।[१५] मदनवर्मन ने ११२८ से ११६३ ई. तक राज्य किया । मदनवर्मन के शासनकाल में जैन धर्म चरमोत्कर्ष पर था ।

खजुराहो में स्थापित प्रतिमाओं पर अंकित शिलालेख संवत् १२१५ (११५८ ई.), १२२० (११६३ ई.) एवं १२३४ (११७७ ई) के हैं ।[१६] संवत् १०८५ का लेख शान्तिनाथ मंदिर के विशाल शान्तिनाथ प्रतिमा तथा संवत् १२१५ का लेख मन्दिर १३ की सम्भवनाथ प्रतिमा पर है । इन लेखों में चन्देल शासक धंग और मदनवर्मन् के नामोल्लेख हैं । उपर्युक्त लेखों के अतिरिक्त मूर्तियों तथा मंदिरों (मंदिर ७) पर कई बिना तिथि वाले लेख भी हैं। खजुराहो के जैन लेख कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण हैं। इन लेखों में जैन धर्म और कला को समर्थन देने वाले श्रेष्ठियों, जैन आचार्यों एवं मुनियों तथा शिल्पियों (रूपकारों) के नामोल्लेख का विशेष महत्त्व हैं । ये लेख १० वीं शती ई० के उत्तरार्ध से लेकर १२ वीं शती ई० के मध्य तक खजुराहो में जैन धर्म और संघ के प्रभावशाली रहे होने की पुष्टि करते हैं । इन लेखों

में धंग के महाराज गुरु वासवचन्द्र (पार्श्वनाथ मन्दिर लेख) तथा देवचन्द्र, कुमुदचन्द्र, चारुकीर्ति, कुमारनन्दी, योगचन्द्र, योगनन्दी, यक्षदेव, विशालकीर्ति जैसे अन्य निर्ग्रन्थ दिगम्बर आचार्यों एवं साधुओं के उल्लेख हैं । ये उल्लेख स्पष्टतः खजुराहो में संगठित जैन संघ की विद्यमानता का संकेत देते हैं। साथ ही श्रेष्ठि पाहिल, पाणिधर तथा उसके पुत्रों त्रिविक्रम, आल्हण और लक्ष्मीधर श्रेष्ठि देदू एवं उनके पुत्र पाहिल[१७] तथा उनके पुत्र साल्हे और उनके पुत्रों महागण, महीचन्द्र, श्रीचन्द्र, जिनचन्द्र और उदयचन्द्र आदि के नामोल्लेख उस क्षेत्र में जैन धर्मावलम्बी श्रेष्ठि परिवार के संगठन तथा जैन मंदिर एवं मूर्ति निर्माण में उनके सहयोग को स्पष्ट करते हैं। इस परिवार ने लगभग २०० वर्षों (९५४ से ११५८ ई.) तक जैनमूर्ति एवं जिनालय निर्माण में सतत् सहयोग दिया । ये श्रेष्ठि ग्रहपति (या गृहपति-गहोई) वंश के थे। इन लेखों में कुछ शिल्पियों के नामोल्लेख भी महत्त्व के है, जिनमें रामदेव पुजू, कुमारसिंह, माहुल, गोलल, देवशर्मा, जयसिंह तथा पीशन् आदि उल्लेखनीय हैं।[१८]

पार्श्वनाथ मंदिर का लेख यह भी सूचना देता है कि मन्दिरों की व्यवस्था आदि के लिए भूमि तथा वाटिकाओं के दान की परम्परा थी । पाहिल ने पार्श्वनाथ मन्दिर के पूजन व्यवस्था के लिए सात वाटिकाओं का दान किया था । पार्श्वनाथ मंदिर के लेख में मंदिर के निर्माणकर्ता पाहिल के धंगराज द्वारा सम्मानित किये जाने का उल्लेख भी महत्वपूर्ण है । इस लेख में ऋषभनाथ को जिननाथ कहा गया है ।[१९]

यहाँ तक कि हिन्दू धर्म में तीर्थ स्थल के रूप में महत्तर महत्त्व प्राप्त कालंजर को जैन धर्म में भी महत्त्व प्राप्त था । चन्देल शासक शैव धर्म के मानने वाले थे, लेकिन वे अन्य धर्मों के प्रति भी उदार और सहिष्णु थे । उनेक शासनकाल में जैनधर्म को पर्याप्त प्रश्रय मिला । खजुराहो, देवगढ़,

अजयगढ़, पपोरा, मड़फा इत्यादि स्थानों में जैन मन्दिरों का निर्माण हुआ। मदनवर्मन के राज्यकाल (११२५-११६५ई.) में जैन धर्म का विशेष रूप से प्रसार हुआ। कहा जाता है कि वे स्वयं भी जैन-मुनियों से बहुत प्रभावित रहते थे। उनके द्वारा महोत्सव नगर(महोबा) में निर्मित कराये गये भगवान नेमिनाथ के कलात्मक देवालय से इसकी पुष्टि होती है। मदनवर्मन की धार्मिक सहिष्णुता के कारण खजुराहो, अहार, बानपुर, दुधही, चाँदपुर, नवगढ़, कुण्डलपुर एवं सौरों जैन तीर्थों के रूप में सुस्थापित हुए । कालंजर में एक जैन मंदिर के अवशेष, उस गाँव से पर्वत के शिखर तक सड़क निर्माण के समय पहाड़ी के पूर्वी किनारे में प्राप्त हुए ।[७१] कतिपय पुरातत्त्वविदों का अनुमान है कि इस मन्दिर का निर्माण भी मदनवर्मन् के शासनकाल में ही हुआ होगा

पार्श्वनाथ मंदिर लेखः-

१. ओं (।।') सम्वत् १०११ समये ।। जिकुलधवलोय दि-

२. व्यमूर्ति स्वसी (शी ल स (श) मदमगुणयुक्त सर्व्व-

३. सत्वा (त्ता) नुकंपी ।' स्वजनजनिततोपो धांगराजेन

४. मान्य प्रणमति जिननाथोयं भव्यपाहिल-

५. नामा । (।।) ? पाहिलवाटिका १ चन्द्रवाटिका २

६. लघुचन्द्रवाटिका ३ सं (शं) करवाटिका ४ पंचाई-

७. तलवाटिका ५ आम्र वाटिका ६ ध (धं) गवाडी ७ (।।)

८. पाहिलवंसे (शे) तु क्षये क्षीणे अपरवंसो (शो) यः कोपि

९. तिष्ठति तस्य दासस्य दासोयं ममदतिस्तु पाल-

१०. येत् ।। महाराजगुरू स्री (श्री) वासवचन्द्र (।।') (वैसा) (श) (ख)

११. सुदि ७ सोगदिने।।

(एपिग्राफिया इण्डिका, खं १ पृ० १३५-३६)

अन्य लेख :-

ग्र' हपत्यन्वये श्रेष्ठि श्रीपाणिधर (।।') ३- ओं ।। ग्रहपत्यन्वये श्रेष्ठिपाणिधरस्तस्य सुत श्रेष्ठिति (त्रि) विक्रम तथा आल्हण। लक्ष्मीधर।। संवत् १२०५ । माघवदि ५।।

४- ओं ।। संवत् १२१५ माघसुदि ५ श्रीमन्मदनवर्म्मदेव प्रवर्द्धमानविजयराज्ये।। ग्रहपतिवंसे (शे) श्रेष्ठिदेदू तत्पुत्र पाहिल्लः। पाहिल्लांगरूहसाधुसाल्हे (ते) नेदं य प्रतिमाकिरतेति।। ।। तत्पुत्राः महागण । महीचन्द्र । सि (रि) चन्द्र। जिनचन्द्र। उदयचन्द्र प्रभशति। सम्भवनाथं। प्रणमति नित्यं।। मंग (ल) महाश्री (:')।। रूपकार रामदेव (:') ।।

(एपिग्राफिया इण्डिका, खं० १, पृ० १५२-५३)

उपरोक्त जैन मंदिरों के निर्माण की पुष्टि के अन्य संदर्भ भी हैं।

ANCIENT BUNDELKHAND

By K.K. Shah

KHAJURAHO

not much distant in date is the Parshwanath, temple built at the these of king Dhangdeva. Save for the Jina limage in the sanctum and jina figures seated in the door lintel. The temple is hardly distunguichable from the Brahmanical shrines standing at the site, showing these by that the artists and architects employed in the making of temple were the same irrespective of the faith for which they were to work.

MAHOBA

Statues of Tirthankaras like Risabhanatha, Padamaprabha, Neminatha, Parsvanatha and Mahavira have been shifted to Government Museum Jhansi. The image of Rsabhanatha is dated in V.S. 1228 and that of Padamaprabha in V.S. 1219 Variety of stones has been used to carve out these icons. Such is the sound given by a seated image of first Tirthankara on being struck that it seems to have been made of metal.

MADANPUR

If name is any indication, **the town was fathered by king Madanavarman**. But an inscription of earlier period found at the place proves its prior existence. Obviously, Madanavarman only renamed it.

Situated south-west of Mehroni at a distance of 36

kms., the original town of Madanpur Stood to the north of the present one now dotted withJaina temples. Collectively spoken of as panchamari, being five in number, the temples offer us nothing save a few icons of ancient times. Walking a little further north, we come upon three Jaina temples known to be the oldest at the place. One of them has an inscribed pedestal with fish-symbol bearing the date V.S. 1212. Another preserves icones of Adinatha. Chandraprabhu, and Sambhavanatha and a long record. The document is dated V.S. 1206 and mentions Madanpur. Further, northwest to this trio, we have two temples.

दा राईज एण्ड डिक्लाइन्ड ऑफ बुद्धिज्म इन इंडिया के पृष्ठ १८४ अनुसार :-

The Rise and Declilne of Buddhism in India

By Kanai Lal Hazra

Jainism had some hold on the people, particularly the trading community. The Khajuraho inscription no.3 of vs 1011, carved on the left door-jamb of the temple of Parsvanatha, records a number of gifts and endowments of gardens, named Pahilvatika, Chandravatika, Laghuchandra vatika etc. by one Pahila, a devotee of Jinanatha, who claims to have been held in esteem by King Dhanga. The devotion of the 'Grahpati' family, to whitch Pahila belonged, is also evidenced by the Darbat-Santinatha image inscription of vs 1132, in which it is found that during the reign of the illustrious Kirtivarman, son of Vijayapala, the image of Santinatha was installed by a group of his hereditary ministers (kulamatya vrnda), viz., Pahila and Jiju. They were disciples of the Jaina teacher Vasavendu or Vasavachandra. Another Grahapati family, devoted to

Jainism, is also mentioned in inscriptions engraved on pedestal of some Jaina images, at Khajuraho. One of them refers of Sreshthi Sri Panidhara, 'Om Grahapatyanvaye Sresthi Sri Panidhara and another dated in samvat 1205 refer to Sresthi Shri Panidhara and his sons, Sresthi Ti (Tri) Vikrama Alhana and Laksmidhara. This was a family Sresthi or bankers and merchants.

दा अर्ली रूलर ऑफ खजुराहो, लेखक शिशिरकुमार मिश्र के पेज २०५-२०६ अनुसार-

THE EARLY RULERS OF KHAJURAHO

Jainism had some hold on the people, particularly the trading community (Sresthins). The Khajuraho Inscription no. 3 of V.S. 1011, carved of the left door-jamb of the temples of Parsvanatha, records a number of gifts and endowments of gardens, named Pahilavatika, Chandravatika Laghuchndravatika, Sankaravatika, Panchaitalavatika, Amravatika and Dhangavadi by one Pahila, a devotee of Jinanatha, who claims to have been 'held in esteem by King Dhanga. The devotion of the 'Grahapati' family, to which pahila belonged, is also evidenced by the Darbat-Santinatha image inscription of V.S. 1132, in which it is found that during the reign of the illustrious Kirtivarman, son of Vijayapala, the image of Santinatha was installed by a group of his 'hereditary ministers' (kulamatyavrnda), viz. Pahilla and Jiju. They were disciples of the Jain teacher Vasavendu or Vasavachadra. Of these two ministers, Pahilla may be identified with Pahila of Khajuraho record, which also refers, as in the other inscription, to Maharajaguru Vasavachadra. In the Khajuraho inscription, however he is not mentioned as a

minister, but that he was an influential person in the court of Danga, probably already a minister, is indicated by the statement that he was 'esteemed by the king'. The same family, out of their devotion to the Jaina faith, sets up an image of Sambhavanatha, as recorded in the Jain image inscription No.8, dated V.S. 1215, during the reign of Madanavarman. It further mentions the name of the father of Pahilla, Sresthi Dedu, his son, Sadhu Salhe, and his grandsons, Mahagana, Mahichandra, Sirichandra, Jinachandra, Udayachandra and others. Anoters Grahapati family, devoted to Jainism, is also mentioned in inscriptions engraved on pedestals of some jaina images, at Khajuraho. One of them refers to Sresthi Sri Panidhara, "Om Grahapatyanvaye Sresthi Sri Panidhara and another dated in samvat 1205 refers to Sresthi sri Panidhara and his sons, Sresthi Ti (tri)-vikrama Alhana, and Laksmidhara. This was a family of Sresthies or bankers and merchants.

The Jaina temples of Khajuraho definitely show that Jainism flourished side by side with Brahmanical cults in the Chandella territory.

Ajaygadh also several rowss of small Jaina figures are noticed. At Mahoba we come aross a number of broken Jaina statues with their respective symbols. Some of them bear names inscribed on their pedestals-viz, Neminatha, Sumatinatha and Ajitanatha. Date and name of the reigning monarch at the time when the statues were set up are also inscribed in some cases. The earliest of such records noticed by Cunnigham is Samvat 1169 (A.D. 1112).The name of Madanavarman is inscribed on the pedestal of Neminatha marked with 'shell-symbol' (sankha), dated in Samvat 1211, and of Paramardideva on the pedestal of unidetified Jaina image dated Samvat 1224.

दी हिस्ट्री आफ दी गुर्जरा-प्रतिहार्स लेखक डॉ बैजनाथ पुरी के पृष्ठ १४५ अनुसार

Jainism seems to be popular in Rajputana and western India at this time. There is no reference to a Pratihara ruler being a devotee of any jain Tirthankara, but there are two inscriptions which are important. The Devagarh (Jhansi Dist.) Jain pillar inscription of Bhojadeva refers to the Jain Temple of Santinatha at Luacchagiri the old name of Devagarh, and the pillars was set up near the temple of holy Jain Arhat by a disciple of Acharya Kamaladeva. It also mentions The gostbika-vajuagagaka who was a member of the Committee of management. The Osia is the time of Vatsaraja of the Imprial Pratihara Dynasty. This Temple of Mahavira stood is the heart of the city, and a merchant named Jindaka renovated it in V.S. 1013. This inscription also mentions the temple committee (gosthi). From these two records it would appear that Jainism was confined to the south-west of U.P. and Rajputana. It could not find favour with the Pratihara rulers, though in the Bappa-bhatti-charita there is a reference to Nagabhata accepting Jainism.

जैन श्रेष्ठियों में जहाँ पाहिल और उनके पौत्र महिचन्द्र ने खजुराहो में जैन मंदिरों का निर्माण कराया वहीं नंदपुर (नवागढ़) में भी उन्होंने मंदिरों का निर्माण कराया । इसके साक्ष्य के रूप में पादांकित शिलालेख, अभिलेख एवं श्रेष्ठियों की मूर्तियाँ संग्रहालय में संग्रहीत हैं। पाहिल श्रेष्ठी की मूर्ति खजुराहो के साथ नवागढ़ में भी है, इसी प्रकार महिचन्द्र एवं रासल श्रेष्ठी की स्वतंत्र मूर्तियाँ एवं अभिलेख सांस्कृतिक, धार्मिक विरासत की साक्षी हैं।

संग्रहालय में संग्रहीत विशालकाय कायोत्सर्ग एवं पद्मासन मूर्तियाँ एवं चारों मानस्तम्भ वर्तमान नवागढ़ में कई जिनालयों के होने के साक्षी हैं।

सन् १९५९ में होने वाले खनन के समय ४-५ जिनालयों के अवशेष प्राप्त हुए थे। जिनका अर्थाभाव के कारण खनन नहीं किया जा सका। वर्तमान में भी सुदूर खेतों में कूपखनन एवं मकान की नींव खनन में जैन विरासत प्राप्त होती है, इससे सिद्ध होता है नवागढ़ प्राचीनकाल में विशाल जैन तीर्थ, साधना स्थल एवं शिक्षाकेन्द्र रहा है।

चंदेल के प्रभावी शासक मदनवर्मन के जैन धर्मावलम्बी होने एवं जैन साधुओं से प्रभावित होने के अनेक साक्ष्य मिलते हैं। मदनवर्मन को मदनब्रह्म के नाम से भी उल्लेखित किया है।[२०]

मदन वर्मन स्वयं भी जैन धर्मावलम्बी हो गये थे परन्तु अन्य मतों से वैमनस्य नहीं था ।[२१] खजुराहो के मंदिर वैष्णव, शैव शाक्त, सौर तथा जैन सम्प्रदाय से संबंधित हैं । यहां सबसे अधिक शैव मंदिर हैं। यह उल्लेखनीय तथ्य है कि चंदेल राजाओं में यशोवर्मन वैष्णव, धंग शैव और मदनवर्मन जैन था ।[२२]

महोबा में देवी चंडिका के ठीक पश्चिम में लगभग १०० मीटर पीछे पहाड़ी पर स्थित- संरक्षित स्मारक इसका निर्माण काल लगभग ११४९ ई० है । यह छोटी पहाड़ी जो कन्दराओं से युक्त है, मदन सागर के दायीं ओर एक द्वीप के रूप में स्थित है । जैन, बौद्ध और शैवधर्माचार्यों ने तपस्या हेतु शांत और नीरव वातावरण में तपोलीन रहने हेतु कन्दराओं का चयन किया होगा । एक कन्दरा में २४ जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं को शिलाओं पर उत्कीर्ण किया गया है । इस पहाड़ी के प्रवेश द्वार पर दो स्तम्भ सर्वतोभद्र के रूप में खड़े हैं, जो अभी हाल ही में किसी ने खंडित कर दिये

हैं । इस स्थान को जैन धर्मावलम्बियों का अतिशय क्षेत्र कहा जाता है । इनको देखने से प्रतीत होता है कि चंदेली राजत्वकाल में जैन धर्म को पर्याप्त प्रश्रय मिला था । चंदेल नरेश मदन वर्मन के राज्यकाल में ही जैन धर्म का विशेष रूप से प्रसार हुआ। कहते हैं कि मदन वर्मन स्वयं भी जैन मुनियों से बहुत प्रभावित रहते थे । उनके राज्यकाल में बहुत से जैन मंत्री परिषद् में थे ।[२३]

प्राचीन जैन मंदिरों के अतिरिक्त स्थानीय संग्रहालयों एवं नवीन जैन मंदिरों में भी जैन मूर्तियाँ सुरक्षित हैं। उनका भी संक्षेप में उल्लेख अपेक्षित है। खजुराहो की प्राचीनतम जिन मूर्तियाँ पार्श्वनाथ मन्दिर की हैं । खजुराहो से दसवीं से बारहवीं शती ई० के मध्य की लगभग २५० जिन मूर्तियाँ मिली हैं , ये मूर्तियाँ श्रीवत्स एवं लांछनों से युक्त हैं । यहाँ जिनों की ध्यानस्थ मूर्तियाँ अपेक्षाकृत अधिक हैं। सुपार्श्वनाथ एवं पार्श्वनाथ अधिकांशतः कायोत्सर्ग में निरूपित हैं । अष्ट-प्रतिहार्यों एवं यक्ष-यक्षी युगलों से युक्त जिन मूर्तियों के परिकर में नवग्रहों एवं जिनों की छोटी मूर्तियाँ भी उत्कीर्ण हैं । सभी जिनों के साथ स्वतन्त्र यक्ष-यक्षी निरूपित नहीं हैं । केवल ऋषभ (गोमुख-चक्रेश्वरी), नेमि (सर्वानुभूति- अम्बिका), पार्श्व (धरणेन्द्र-पद्मावती) एवं महावीर (मातंग-सिद्धायिका) के साथ ही पारम्परिक या स्वतंत्र लक्षणों वाले यक्ष-यक्षी निरूपित नहीं हैं। अन्य जिनों के साथ वैयक्तिक विशिष्टताओं से रहित सामान्य लक्षणों वाले यक्ष-यक्षी निर्मित हैं । खजुराहो में केवल ऋषभ (६०), अजित, सम्भव, अभिनन्दन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभु, शान्ति, मुनिसुव्रत, नेमि, पार्श्व (११) एवं महावीर (९) की ही मूर्तियाँ हैं । यहाँ द्वितीर्थों (९), त्रितीर्थों (१, मन्दिर ८) और चौमुखी (१, पुरातात्तिवक संग्रहालय, खजुराहो १५८८) जिन मूर्तियाँ भी हैं। (चित्र ६१,६३)। मंदिर १८ के उत्तरंग पर किसी जिन के दीक्षा-कल्याणक का दृश्य है । जैन युगलों (७) एवं आचार्यों की भी कई मूर्तियाँ हैं। जैन

युगलों के शीर्ष भाग में वृक्ष एवं लघु जिन मूर्ति उत्कीर्ण हैं । स्त्री की बायीं भुजा में सदैव एक बालक प्रदर्शित है।

अम्बिका (११) एवं चक्रेश्वरी (१३) खजुराहो की सर्वाधिक लोकप्रिय यक्षियाँ हैं । चित्र (५७) पार्श्वनाथ मंदिर की दक्षिणी जंघा की एक द्विभुज मूर्ति के अतिरिक्त अम्बिका सदैव चतुर्भुज है। चक्रेश्वरी चार से दस भुजाओं वाली हैं । पद्मावती की भी तीन मूर्तियाँ हैं । मन्दिर २४ के उत्तुंग पर सिद्धायिका की भी एक मूर्ति है। अश्ववाहना मनोवेगा की एक मूर्ति पुरातात्त्विक संग्रहालय, खजुराहो (९४०) में है । यक्षों में केवल कुबेर की ही स्वतन्त्र मूर्तियाँ (४) मिली हैं।

अन्य स्थल :- जबलपुर-भेड़ाघाट मार्ग के समीप त्रिपुरी के अवशेष हैं, जिसमें चक्रेश्वरी, पद्मावती, ऋषभ एवं नेमि की मूर्तियाँ हैं । बिल्हारी (जबलपुर) में लगभग दसवीं शती ई० का जैन मन्दिर एवं मूर्ति अवशेष है । मन्दिर के प्रवेश-द्वार पर पार्श्व और बाहूबली की मूर्तियाँ हैं । जबलपुर से अर की एक मूर्ति मिली हैं । शहडोल से ऋषभ, पार्श्व, पद्मावती, जैन युगल एवं जिन चौमुखी मूर्तियाँ (११ वीं शती की प्राप्त हुई हैं) ऊन (इन्दौर) और (टीकमगढ़) से ११ वीं-१२ शती ई. की जैन मूर्तियाँ मिली हैं।[२४] अहार से शान्ति (११८० ई०), कुंथु, अर एवं महावीर की मूर्तियाँ उपलब्ध हुई हैं । अहार से कुछ दूर बानपुर एवं जतारा से भी जैन मूर्तियाँ (१२ वीं-१३वी. शती ई०) मिली हैं । **टीकमगढ़ के निकट स्थित नवागढ़ से बारहवीं शती ई० के जैन मन्दिर एवं मूर्ति अवशेष मिले हैं । यहाँ से अरनाथ (११४५ ई०) और पार्श्व की मूर्तियाँ मिली हैं ।**[२५] विदिशा के बडोह एवं पठारी से दसवीं-ग्यारहवीं शती ई० के जैन मन्दिर एवं मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। पठारी से अम्बिका एवं महावीर की मूर्तियाँ मिली हैं। रीवा एवं गुर्गी से जिनों एवं जैन युगलों की मूर्तियाँ (११ वीं शती ई०)

मिली हैं । देवास और गंधावल से प्राप्त जैन मूर्तियों (११वीं-१२ वीं शती ई०) में पार्श्व एवं विंशतिभुज चक्रेश्वरी की मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं ।

महोबा के कस्बा अथाई मंदिर में २४ तीर्थंकरों की काले पाषाण की प्रतिमाएँ स्थापित की गई थीं । वह विशाल जिनालय ध्वस्त होकर टीले के रूप में आज भी दिख रहा है।

महोबा में सं. १२१८ की नेमिनाथ तथा झांसी संग्रहालय में महोबा से प्राप्त श्री वृषभनाथ सं. १२२८ श्री नेमिनाथ सं. १२५३ श्री पार्श्वनाथ, श्री महावीर, श्री पद्मप्रभ सं. १२१६ श्री अजितनाथ सं. १२२० जैन पुरा वैभव के साक्षी हैं ।

धुबेला संग्रहालय में मऊ सहानिया से प्राप्त श्री नेमिनाथ सं. ११६६, श्री मुनिसुब्रतनाथ सं. ११६६, श्री शांतिनाथ जिस पर मदनवर्मनदेव का राज्यकाल अंकित है सं. १२०३, श्री आदिनाथ सं. १२०३ चंदेलवंश की यशोगाथा एवं वैभव प्रदर्शित कर रहे हैं ।

नवागढ़ नंदपुर अतिशय क्षेत्र के संग्रहालय में संग्रहीत प्रतिहारकालीन मूर्तियों के साथ सं. ११२३ श्री ऋषभदेव, उपाध्याय परमेष्ठी सं. ११८८, श्री महावीर स्वामी सं. ११६५ श्री शांतिनाथ भगवान सं. १२०२, चार मानस्तंभ सं. १२०३, श्री अरहंत भगवान सं. १२०२, इनके साथ विशालकाय ७.५ फुट कायोत्सर्ग श्री आदिनाथ, ५ फुट पद्मासन पार्श्वनाथ एवं सैकड़ों भग्न प्रतिमाएँ चंदेल वंश की धरोहर हैं।

सिद्धक्षेत्र अहार जी के मूलनायक भगवान शांतिनाथ श्री कुंथनाथ के साथ संग्रहालय में लगभग ३०० प्रतिमाएँ संग्रहीत हैं ।

मदनपुर के श्री आदिनाथ , श्री संभवनाथ, श्री चन्द्रप्रभ, द्रोणी के

श्री शांतिनाथ, दुधई के विशाल श्री शांतिनाथ एवं आदिनाथ , चांदपुर के श्री शांतिनाथ चंदेल शासन के मूर्ति शिल्प के अनुपम मनोज्ञ पूंजी है ।

सोनागिरि, देवगढ़ में स्थित सैकड़ों प्रतिमाएँ जिनका उल्लेख अति संक्षिप्त देना भी संभव नहीं है, जैन शासन के चंदेलकालीन अभ्युदय का जीवन्त साक्षी हैं । खजुराहो, दौनी, चांदपुर, कुन्दनपुर तथा अन्य स्थानों से प्राप्त अनेक जैन मंदिर चन्देलकाल में जैन-धर्म के अभ्युदय तथा प्रचार के गीत अब भी गाते हैं । जैन मूर्तियाँ भी समस्त बुन्देलखण्ड में पाई जाती हैं और उनसे भी जैन - धर्म के प्रचार का बोध होता है । जैन मूर्तियों में विशेष उल्लेखनीय पपौरा की मूर्ति है। यह काले संगमूसा पत्थर की बनी हुई है । निर्माण कौशल की अद्भुत कला के साथ ही इसकी ओज इतना विलक्षण है, कि ऐसा प्रतीत होता है मानों यह तैल-स्नान किए हो।

जैनों का अभ्युदय तथा उत्कर्ष मंदिरों तथा मूर्तियों की स्थापना तक ही सीमित न था । इस बात के अनेक प्रमाण हैं कि वे उनकी रक्षा तथा जैन साधुओं की आहार-विहार की व्यवस्था आदि के लिए भी सतत् जागरूक थे । वे मंदिरों को दान देते थे और अपने धर्मोपदेशकों का उचित सम्मान करते थे। विक्रमाब्द १०११ (सन् ९५४ ई.) के खजुराहो जैन मंदिर लेख में जैन भक्त पाहिल के उपहारों का उल्लेख है । उसने जिननाथ मंदिर को अनेक उद्यान दान दिये थे । खजुराहो में प्राप्त ३ अन्य शिलालेखों में से दो में गृहपति वंशीय जैन भक्त श्रेष्ठि पाणिधर का उल्लेख है । तीसरे शिलालेख में विक्रमाब्द १२१५ (सन् ११५८ ई०) में साधु द्वारा प्रदत्त जैन - मूर्ति का निर्देश है ।[२६]

हार्निमैन जैन- शिलालेख में नेमिनाथ जी, कृष्णमूर्ति का उल्लेख है । इन समस्त जैन साक्ष्यों से प्रतीत होता है कि चन्देलकाल तथा उनके पश्चात् भी जैन-धर्म का अभ्युदय तथा प्रचार था ।

बुन्देलखण्ड के अन्य जैन तीर्थ स्थान सोनागिरि (अथवा स्वर्णगिरि), नैनागिरि तथा द्रोणगिरि में थे और उनका सम्मान आज भी है । दूर-दूर

से सहस्रों यात्री प्रतिवर्ष वहाँ जाते हैं। महोबा जैन लेख में विक्रमाब्द १२२० अथवा सन् ११६३ ई० में रत्नपाल प्रदत्त अजितनाथ मूर्ति का वर्णन है।

बुन्देलखण्ड के सागर, दमोह, टीकमगढ़, झाँसी, ललितपुर, महोबा, चित्रकूट आदि जिला केन्द्रों के अनेक ग्रामों में जैन मंदिरों के साथ-साथ वैष्णव, शैव, सौर, गणेश मंदिर भी मिलते हैं । जिनका रख-रखाव न होने के कारण प्राकृतिक प्रकोप, जीर्णता एवं असामाजिक तत्त्वों द्वारा मुख्य एवं विशिष्ट कलाकृतियाँ एवं मूर्तियाँ स्थानांतरित की जा चुकी हैं, की जा रहीं हैं ।

यदि प्रशासन आज भी इस पुरातात्त्विक महत्त्व के स्थलों का संरक्षण करे तो भारतीय संस्कृति इतिहास एवं कला की जीवन्तता को पुनजीर्वित किया जा सकता है ।

नंदपुर वर्तमान नवागढ़ का उद्‌भव एवं विकास

बुन्देलखण्ड तीर्थों की भूमि है, यहाँ सभी धर्मों के विशेष तीर्थ एवं धर्मस्थल हैं जिनका ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक महत्त्व है । बुन्देली परम्परा, भाषा, त्यौहार, इतिहास देशभक्ति एवं शौर्य विलक्षण है । बुन्देलखण्ड का धार्मिक सौहार्द एक आदर्श है जहाँ एक ही स्थान पर शैव, शाक्त सौर, वैष्णव एवं जैन मंदिरों का समूह प्राप्त होता है । खजुराहो, महोबा, देवगढ़ मदनपुर, दुधही, चांदपुर आदि आज भी इसके साक्षी हैं ।

धार्मिक सद्‌भावना से पारस्परिक संबंध आत्मीयता, स्नेह वात्सल्य से जहाँ द्वेष ईर्ष्या भाव नष्ट होता है, वहीं सामाजिक सुरक्षा, संस्कृति संरक्षण, विकास, सुख, समृद्धि एवं शांति भी बढ़ती है ।

चंदेल शासकों का आरंभ से ही जैनत्व के प्रति बहुमान रहा है । जिसका बीजारोपण एवं पल्लवन चन्द्र वर्मा (७४० ई.) से यशोवर्मन (९३० ई.) उनके पौत्र देवलब्धि ने किया । यशोवर्मन ने दक्षिणभारत के श्रवणबेलगोला में गोल्लाचार्य के रूप में श्रमण दीक्षा लेकर अभूतपूर्व प्रभावना की है। मदनवर्मन (११२८ई.) ने भी जैन धर्म को अंगीकार कर इसको पुष्पित एवं फलित कर बुन्देलखण्ड में जैन मंदिरों का निर्माण कराया । उनके राजत्व काल में मंत्री मंडल, कोष व्यवस्था से जैन मंदिरों का निर्माण कराया । उनके मंत्री मंडल, कोष व्यवस्था में जैनों का विशेष योगदान रहा । यही कारण रहा कि कई परिवारों को विशेष उपाधियों से सम्मानित किया गया

तथा उन्हें जैन मंदिर जैन प्रतिमा बनाने के लिए सहयोग एवं प्रोत्साहन भी दिया गया ।

इन श्रेष्ठियों ने देवगढ़, चंदेरी, थूबोन, मदनपुर, बानपुर, नवागढ़ (नंदपुर) दुधही, चांदपुर, अहार, पपौरा, महोबा, खजुराहो, कुण्डलपुर, पावापुर, अजयगढ़ आदि नगरों में विशाल जिनालयों के साथ-साथ इन्हें व्यावसायिक केन्द्र एवं राजधानी बनाकर संपूर्ण भारत से इनको सड़क मार्ग से जोड़कर सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में तालाबों, बावड़ियों झीलों कूपों नहरों का जाल फैलाकर सुख समृद्धि के द्वार खोले।[२]

डॉ कस्तूर चन्द्र सुमन ख्यातिप्राप्त शिलालेख विशेषज्ञ ने कई दिनों नवागढ़ (नंदपुर) में प्रवास करके समस्त शिलालेखों का वाचन कर उन्हें लिपि रूप देने का सार्थक पुरुषार्थ किया है तथा श्री हरिविष्णु अवस्थी वरिष्ठ इतिहासविद् ने स्वप्रेरणा से नवागढ़ (नंदपुर) संग्रहालय की समस्त प्रतिमाओं एवं भग्नावशेषों का सूक्ष्मता से निरीक्षण कर इसके इतिहास को पुनर्जीवित करके सभी को अचंभित किया है । 'प्राचीन जैन तीर्थ नंदपुर शिलालेखों के दर्पण में 'संस्कार सागर माह जनवरी २०१६ में प्रकाशित आलेख में इनका विवरण दिया गया है ।

गृहपति परिवार के देदू, पाहिल, साल्हे, महागण, महीचन्द्र, सिरीचन्द्र, जिनचन्द्र, उदयचन्द्र, देल्हण, सुल्हण, कल्हण सुहलण, मल्हण, जल्हण, रामचन्द्र, रासल, लशम के नामों को इतिहास में सम्मान जनक स्थान दिया गया है, मदनवर्मन के राजत्वकाल में १२ वीं सदीं में गुप्त शासकों द्वारा स्थापित नंदपुर को समृद्धशाली, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक नगर के रूप में समुन्त किया गया । सरोवरों, बावड़ियों, दुर्ग एवं मठ का निर्माण किया गया ।[३] जो आज ऐतिहासिक धरोहर के रूप में शासन-प्रशासन से जीवन दान की याचना कर रही है । न जाने कब उनका भाग्य जगेगा ।

नंदपुर में उपलब्ध शिलालेखों तथा खजुराहो, मदनपुर, महोबा, धुबेला,

पपौरा जी की प्रतिमाओं एवं अन्य संग्रहीत भग्नावशेषों में प्राप्त शिलालेखों के अनुसार जहाँ नंदपुर नगर में संवत् ११२३ में ऋषभदेव जिनालय, संवत् ११९५ (सन् ११३८ ई.) में भगवान महावीर, अरनाथ स्वामी एवं विशाल चौबीसी जिनालय का निर्माण महीचन्द्र एवं पुत्र देल्हण द्वारा कराया गया। वहीं इन्होंने (महीचन्द्र) एवं उनके भाई महागण, सिरीचन्द्र, जिनचन्द्र उदयचन्द्र ने खजुराहो में श्री संभवनाथ भगवान की प्रतिष्ठा संवत् १२१५ में कराई तथा भाई शुभचन्द्र, उदयचन्द्र, जिनचन्द्र के पुत्र हरिश्चन्द उनके पुत्र लक्ष्मीधर ने भगवान शांतिनाथ की प्रतिष्ठा संवत् १२०३ में कराई ।

नवागढ़ (नंदपुर) के शिलालेख में बील्हा पुत्र लषम् द्वारा भी प्रतिमा स्थापना का उल्लेख है, वहीं धुबेला में संवत् ११९९ में भगवान नेमिनाथ की प्रतिष्ठा लषम् के द्वारा कराई गयी । इतिहासकार जनरल कनिंघम ने सर्वप्रथम बुन्देलखण्ड का भ्रमण करके ऐतिहासिक भवनों, सांस्कृतिक रीति रिवाजों, धार्मिक मंदिरों सहित कई नगरों को समृद्धशाली व्यवसायिक केन्द्रों के रूप में वर्णित किया है यथा चांदपुर, दुधही, महोबा, मदनपुर, खजुराहो आदि ।

काल का तांडव कब किस रूप में हुआ होगा, लोभवश , स्वार्थवश किसने क्या किया..? समय के गर्भ में विलीन हो गया । न जाने कब यह समृद्धशाली धरोहर भूगर्भ में समा गयी, इनमें से कुछ का तो आज अस्तित्व ही नहीं बचा है । मात्र खंडहर शेष हैं । जो इसकी यथोगाथा के साक्ष्य हैं । ''खंडहर बता रहे हैं, इमारते बुलंद थीं''

बुन्देलखण्ड में कहावत है:-

''नौ सौ कुआं नवासी बेर, उम्मरगढ के गेरउं गेर''

समय के साथ सत्ता के लिये युद्धों द्वारा विध्वंस इन सांस्कृतिक , ऐतिहासिक कला क्षेत्रों एवं धार्मिक स्थलों को झेलना पड़ा। मदनपुर, जिला

ललितपुर की बारादरी में लगे दो लघु अभिलेखों में परमर्दिदेव के राज्य जेजाक भुक्ति पर पृथ्वीराज चौहान की विजय आनंद एवं उनके द्वारा किए गये विध्वंस का उल्लेख मिलता है।

श्री चहमान वंश्ये न पृथ्वीराज भू भुज परमर्दि नरेन्द्रस्य देशोयम् मुदवास्यते

परमर्दिदेव के इस देश में चहमान वंश के राजा पृथ्वीराज के द्वारा आनंद स्थापित किया गया ।[४]

ओं अन्नोराजस्य पौत्रेण श्री सोमेश्वर सुनुना जैजाक भुक्ति देशेयं पृथ्वीराजेवा लुनित।सं. १२३६

अर्न्नराज के पौत्र तथा सोमेश्वर के पुत्र पृथ्वीराज द्वारा जेजाक भुक्ति नाम के इस देश को संवत् १२३६ (११८२-८३ ई.) में ध्वस्त किया गया । ''[५]

उद्घाटन की विलक्षण कथाः-पं. गुलाबचंद जी 'पुष्प' सुप्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सक थे । वह जब चिकित्सा हेतु मैंनवार जा रहे थे तो नावई ग्राम की पहाड़ी के निकट पाषाण खंडों के ढेर के समीप टीले पर जहाँ कई खंडित जिनबिम्ब पड़े थे। एक ग्रामीण मनौति माँग रहा था। उन्हें विश्वास हो गया अवश्य ही कोई जैन प्रतिमा है, जिसकी श्रद्धा से गाँव वालों के संकट दूर होकर उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण कर रही है।

टीले पर विशाल इमली के वृक्ष को हटाने के कार्य को ग्रामीण जनों ने देव स्थान होने से मना कर दिया था । तब पं. 'पुष्प' जी ने अपने साथियों नब्बी पठया, स्वरूप पठया मैंनवार, कड़ोरे सेठ मैंनवार , मनकू सिंघई ककरवाहा, पल्टू मिठया, धर्मदास हैदरपुर, पन्ना सेठ सोजना, अनन्दी सिंघई अजनौर, हल्कू सिंघई डूंडा, कामता वैद्य गुढ़ा के साथ मिलकर इसे काटकर हटाने का सम्यक् पुरुषार्थ किया । चारों ओर फैली जंगली झाड़ियों

एवं शिलाखण्डों को हटाने पर उन्हें एक संकीर्ण मार्ग मिला, जिससे वह जमीन के अन्दर भौंयरे में गये, वहाँ उन्हें धूल मिट्टी में धँसी भगवान अरनाथ स्वामी की मीन चिन्ह वाली ४'६ फुट उत्तुंग कायोत्सर्ग मुद्रा में प्रतिमा के दर्शन हुए। तभी उन्होंने संकल्प किया कि वह इसकी विधिवत् प्रतिष्ठा करके इस क्षेत्र का उत्थान करेंगे ।

नवागढ़ उद्भव सन् १६५६ में प्रसिद्ध प्रतिमा विज्ञानी पं. नीरज जी सतना नवागढ़ वंदना हेतु पधारे, उन्होंने आसपास के गाँव में भ्रमण करके पाया जगह-जगह पुरावशेष बिखरे पड़े हैं । कई टीले हैं जिनमें विशिष्ट पुरा सम्पदा प्राप्त होने की पूर्ण संभावना है । उनके मन में भगवान अरनाथ स्वामी के प्रति अपूर्व श्रद्धा भाव जाग्रत हुआ। ३० नवम्बर १६५६ मार्गशीर्ष कृष्ण ३० सं. २०१६ को एक बैठक सोजना जैन मंदिर में सिं. माणिक चन्द जी ककरवाहा की अध्यक्षता में बुलाई गयी । जिसमें क्षेत्र के उत्थान की रूपरेखा बनाई गयी । क्षेत्रीय समाज से चंदा एकत्रित किया गया तथा प्रबंधकारिणी कमेटी का प्रथम मनोनयन किया गया । अध्यक्ष मनकू सिंघई ककरवाहा, मंत्री धर्मचन्द्र बजाज गुढ़ा, कोषाध्यक्ष हलकाई सेठ मैंनवार का मनोनयन सर्व सम्मति से हुआ ।

ललितपुर के एडवोकेट श्रीमान् अभिनंदन जी टड़ैया एवं बाबू हरिप्रसाद जी के माध्यम से सकल पंचान की बैठक में परामर्श हुआ कि नवागढ़ में आवागमन के साधन एवं अन्य सुविधाएँ न होने के कारण अन्यत्र प्रतिमा की स्थापना की जाये । यह कार्य सेठ पन्नालाल सोजना, धर्मचन्द्र जी बजाज गुढ़ा एवं सुखलाल जी सोजना को सौंपा गया । उन्होंने नवागढ़ आकर सरपंच एवं गाँव वालों को इस योजना से अवगत कराया ।

सरपंच परमानंद यादव ने कड़े स्वर में कहा **"प्रतिमा यहीं रहेगी, ये हमारे संकटमोचन भगवान हैं"** आपको जो भी करना है यहीं करें।

प्रथम प्रयास - धर्मभूषण पं. शीलचन्द्र जी न्यायतीर्थ साढूमल के साथ हीरालाल जी हटा की अध्यक्षता में सकल पंचान की बैठक की गयी, जिसमें नवागढ़ क्षेत्र के विकास हेतु परामर्श किया गया । समाज से चंदा भी किया गया, अच्छी राशि एकत्रित हुई, परन्तु कार्य आरंभ नहीं हो सका । पं. नीरज जैन सतना, क्षेत्रीय कमेठी एवं पं. पुष्प जी के प्रयास भी असफल रहे । तब यह मानकर संतोष किया कि अभी उत्थान की मंगल बेला नहीं आई है ।

द्वितीय प्रयास - कमेटी ने दो बार बैठक आयोजित की परन्तु कुछ लोगों की ही उपस्थिति हो सकी, सकल समाज को निर्जन बीहड़ स्थान पर इकट्ठा करने के उपायों पर विचार किया गया । सबने एक मत से कहा कि समाज को एकत्रित करने के लिए धर्मिक आयोजन किया जाये तथा सभी को उसमें आमंत्रित भी किया जाये । इसके लिए ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी अर्थात् श्रुत पंचमी का दिन निश्चित किया गया । इस आयोजन में अतिथि सत्कार का भार मैंनवार समाज ने स्वेच्छा से संभाला ।

पूजा अनुष्ठान के पश्चात् शुभ बेला में कार्यारंभ हुआ । उत्खनन में तीन-चार मंदिरों के अवशेष रूप दीवारें मिली । इन्हें देखकर वयोवृद्ध श्रीमानों ने बताया भौंयरे के चारों ओर चौबीसी रही है, जो कालान्तर में ध्वस्त हो

गयी होगी उसी के अवशेष हैं । सरकारी व्यवधान से खनन कार्य आगे नहीं हो सका । न जाने कितने रहस्य यहाँ की पुण्य भूमि अपने अंतस में समेटे है ?

प्रथम आयोजन- इस साधन विहीन क्षेत्र पर आयोजन करने का भाव होना किसी अतिशय से कम नहीं है । क्षेत्र के प्रति समर्पित स. सिं. नंदलाल जी, सिं. स्वरूपचंद्र जी, सिं. बल्देव प्रसाद जी, सिं. गट्टेलालजी मैनवार ने दीपावली की अष्टान्हिका में १००८ सिद्धचक्र विधान कराने का भाव प्रांतीय पंचान के समक्ष रखा । सभी ने उत्साह पूर्वक अनुमोदना कद्धया । यह विधिविधान पं. नीरज जी सतना ने सम्पन्न कराया, जिसमें धर्मभूषण गुरुवर पं. शीलचन्द्र जी साढूमल को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। इस विधान के पुण्य प्रभाव से समस्त अवरोध स्वयं ही दूर होते गये ।

द्वितीय आयोजन - मेले से पूर्व सकल पंचान की बैठक बुलाई गयी, जिसमें विचार किया गया इस बार कौन सा विधान किया जाये. ...? जब कमेठी ने पं. नीरज जी से परामर्श किया तो उन्होंने कहा नवकेवललब्धि विधान किया जाये, जिससे क्षेत्र में सदैव लब्धि बनी रहे । इस विधान हेतु पूजा सामग्री संयोजन की बात उठी तो सेठ कन्हैयालाल जी नाथूराम जी मैंनवार की ओर संकेत किया गया, उन्होंने तुरंत स्वीकारता प्रदान की, जिससे सभी अत्यंत प्रसन्न हुए, मानों सारा काम पूर्ण हो गया हो ।

उत्कर्ष का शुभारंभ - सकल पंचान के निर्णय अनुसार सभी क्षेत्रीय समाज ने उत्साहपूर्वक १.१.१९६०, पौष शुक्ल ३ संवत् २०१६ को प्रातः १० बजे संग्रहालय का शिलान्यास ब्र. पं. मूलचन्द्र जी प्रतिष्ठाचार्य द्वारा सब इंस्पेक्टर श्री परशुराम यादव के करकमलों से सम्पन्न कराया । जिसमें मुखिया मजबूत सिंह जू मैनवार, ठाकुर हनुमंत सिंह जू कवराटा, श्री ठाकुर साहब सड़कौरा, मुखिया परमानंद यादव नवागढ़, नावई श्री छक्की

लाल जी यादव, श्री देवी सिंह जू गूजर, सेठ हीरालाल हटा उपस्थित थे । साधनविहीन क्षेत्र में विकास एवं निर्माण कार्य दुरूह था, पर जैसे-तैसे कुछ कच्चे कमरों का निर्माण सोजना समाज से प्राप्त २०० रुपया एवं नादेल समाज से प्राप्त गार्डर के द्वारा समस्त क्षेत्रीय समाज के सहयोग से किया गया।

प्रथम वार्षिक मेला – सकल दिग. जैन समाज के परामर्श से श्रद्धालुओं को क्षेत्र पर आमंत्रित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष मेले के आयोजन का निर्णय लिया गया । प्रथम वार्षिक त्रिदिवसीय मेला दिनांक २७.२९ फरवरी १९६१, फाल्गुन शुक्ल १-३ संवत् २०१६ को आयोजित किया गया । जिसमें श्रद्धेय पं शीलचन्द्र जी न्यायतीर्थ साढूमल एवं ब्र. आत्मानंद जी की उपस्थिति होने से मेला भव्यतापूर्वक अत्यंत प्रभावना के साथ संपन्न हुआ । इसमें निर्माण हेतु अच्छा चंदा भी प्राप्त हुआ था । इस मेले में मुनि श्री आदिसागर जी महाराज के साथ अनेक त्यागी गणों की उपस्थिति की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी थी। महाराज श्री के केशलौंच का मंगल कार्य भी मेले में सम्पन्न होना था, परन्तु अचानक अस्वस्थ होने से वह टल गया । बाद में महाराजश्री का प्रवास नवागढ़ में कई दिन रहा ।

मंदिर निर्माण – श्रद्धालुओं की जागरूकता एवं सक्रिय सहयोग से भौंयरे मंदिर का जीर्णोद्धार आरंभ हुआ। इस कार्य में दीवार से संवत् ११९५ की प्रशस्ति वाली भगवान महावीर स्वामी की एक खंडित प्रतिमा तथा भगवान पार्श्वनाथ भगवान की लघुकाय धातु की प्रतिमा प्राप्त हुई।

प्राचीन शिलाखण्डों को व्यवस्थित कर भौंयरे का सुधार करके अरनाथ भगवान को उसी स्थान पर प्रतिष्ठित किया गया, जहाँ वह पूर्व से विराजमान थे। अन्य प्रतिमाओं को एक कक्ष में अस्थायी वेदी बनाकर स्थापित किया गया। धातु की प्रतिमाओं को सुरक्षा की दृष्टि से एक पेटी में रखा गया।

परकोटे का शिलान्यास – संग्रहालय भवन अधूरा था। जंगली जानवरों का आवागमन होने से असुरक्षा एवं अशुद्धि होने के कारण प्रबंध समिति ने प्राथमिकता से परकोटे के निर्माण का निर्णय लिया। जिसका शिलान्यास २४-९-१९६० शनिवार, अश्विन शुक्ल ४ संवत् २०१६ को इंस्पेक्टर सोजना एवं मुंशी श्री शेव सिंह जी कुशवाहा थाना सोजना द्वारा किया गया। इस तरह क्षेत्र की सुरक्षा व्यवस्था के साथ मंदिर निर्माण का कार्य सम्पन्न किया जाने लगा ।

निर्माण प्रगति – नवागढ़ प्राचीन नंदपुर के ऐतिहासिक सांस्कृतिक एवं पुरातात्त्विक रहस्य धीरे-धीरे उद्घाटित होना आरंभ हुआ । ब्र. निशांत भैया जी ने क्षेत्रीय समाज एवं वृद्ध ग्रामीण जनो से जानकारी प्राप्त की तो ज्ञात हुआ वर्ष १९६५ एवं १९६६ में क्षुल्लक चिदानंद महाराज ने स्व प्रेरणा से यहाँ से चातुर्मास किए है । बुन्देली गौरव क्षुल्लक गणेशप्रसाद वर्णी से दीक्षित चिदानंद जी का स्वाध्याय एवं शिक्षण कराने का अद्भुत ढंग था । आगम के गूढ़ रहस्यों को सरल-सीधी भाषा में जैन ही नहीं अजैनों को भी कई घंटे कक्षा लेकर समझाते थे ।

नवागढ़ चातुर्मास में वह फाइटोन पहाड़ी के पास जैन पहाड़ी पर सभी लोगों ने नैतिक शिक्षा देते थे । अहिंसक पद्धति से जीवन यापन के सूत्र जो उनके जीवन का मूल आधार बनते थे । आज भी ऐसे ग्रामीण है है जिन्हें णमोकार मंत्र पर श्रद्धा है । छहढाला की पंक्तियाँ स्मरण करते हैं तथा प्रतिदिन अरनाथ भगवान के चरणों में धोक देने आते हैं ।

गाँव वालों ने बताया क्षुल्लक जी आहार लेने के पश्चात जंगल में साधना करने जाते थे । गाँव वाले उन्हें ढूंढने जाते थे पर वह कहाँ साधनारत है खोज नहीं पाते थे ।

इन दो चातुर्मासों में स्थानीय समाज ने क्षुल्लक जी की आहार व्यवस्था तत्परता से संभाली । आपके स्वाध्याय में डूंडा, मैनवार, सोजना एवं गुढ़ा के श्रावकों ने पूर्ण लाभ प्राप्त किया । गाँव के सरंपच आज भी उनके कई प्रेरणास्पद संस्मरण सुनाते हैं ।

पुष्प जी के समर्पण एवं अध्यक्ष सिं. मथुरा प्रसाद महरौनी, मंत्री सनत कुमार जी ललितपुर, कोषाध्यक्ष सेठ दयाचंद्र मैंनवार की लगन शीलता से अन्य नगरों के श्रेष्ठियों से दान प्राप्त कर १९८१-८२ में जिनालय की ऊपरी मंजिल तैयार हो गयी। क्षेत्र के बायीं ओर एक हाल का निर्माण लाला श्रीचन्द्र जी; चावल वाले मुजफ्फरनगर एवं उनके परिजनों के सहृदय सहयोग से पूर्ण हुआ । कर्मचारियों के आवास के लिए २.३ कच्चे कमरों का निर्माण करके प्रतिदिन की पूजा व्यवस्था एवं यात्रियों के आवागमन को व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया । जिसमें बूदौर के समर्पित भक्त श्री बंदूलालजी की २७ वर्ष तक दीर्घकालीन सेवा सराहनीय रही ।

शिखर एवं वेदी निर्माण – भगवान् अरनाथ स्वामी की प्रतिमा के साथ भगवान् शांतिनाथ एवं भगवान् कुंथुनाथ की कायोत्सर्ग प्रतिमा

विराजमान करने की भावना अध्यक्ष मथुरा प्रसाद सिंघई महरौनी एवं कोषाध्यक्ष दयाचंद्र जी मैंनवार द्वारा व्यक्त की गयी । तदनुसार वेदी एवं शिखर का निर्माण कार्य आरंभ किया गया

नवागढ़ क्षेत्र में आयोजित पंचकल्याणक – नवागढ़ में संगृहीत अभिलेख (प्रशस्ति) सहित प्राचीन खण्डित प्रतिमाएँ विक्रम संवत् ११२३ भगवान आदिनाथ खण्डित आसन, ११८८ उपाध्यान बिम्ब, ११९५ भगवान महावीर खंडित प्रतिमा, १२०२ भगवान शांतिनाथ एवं अन्य खण्डित तीन आसन, १२०३ चारों मानस्तम्भ १४९० धातु चौबीसी, १५४५ लघुकाय भगवान पार्श्वनाथ १५८६ ताम्र पार्श्वनाथ भगवान से लेकर वर्तमान में प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ वेदियों में विराजमान हैं । इस अन्वेषण में डा. कस्तूरचन्द्र 'सुमन' जयपुर एवं ब्र. जयकुमार 'निशांत' का प्रयास सराहनीय है ।

इससे प्रतीत होता है नंदपुर वर्तमान नवागढ़ में प्रथम पंचकल्याणक महोत्सव संवत् ११२३ में एवं द्वितीय पंचकल्याणक महोत्सव संवत् ११९५ तथा तृतीय पंचकल्याणक संवत् १२०३ में आयोजित किया गया होगा, जिसमें प्रतिष्ठित बिम्ब संग्रहालय में संग्रहित है, उनमें ही क्षेत्र के मूलनायक अरनाथ स्वामी भी हैं।

चतुर्थ गजरथ महोत्सव - चतुर्थ गजरथ महोत्सव मुनि श्री नेमिसागर जी के सान्निध्य में समारोह अध्यक्ष बाबू घनश्याम दास जी टीकमगढ़ मंत्री श्री ज्ञान चन्द्र जी नायक टीकमगढ़ एवं क्षेत्रीय समाज के सक्रिय सहयोग से पं. गुलाब चन्द्र जी 'पुष्प' के

प्रतिष्ठाचार्यत्व में दिनांक ५ अप्रैल १९८५ से ११ अप्रैल १९८५ तक अभूतपूर्व प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ । जिसमें तपकल्याणक के दिन क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की गई ।

इन सभी प्रतिमाओं के अभिलेख में गोलापूर्व अन्वे का स्पष्ट उल्लेख मिलता है । जिससे संकेत मिलता है कि चंदेलशासन में प्रतिभाशाली राज्यमान गोलापूर्व श्रेष्ठी में रहे होंगे जिनके द्वारा यहाँ समय-समय पंचकल्याणक आयोजित किये होंगे ।

नवागढ़ में संगृहीत पुरासम्पदा में जैन बाहुल्य सामग्री प्रचुर मात्रा में है, अन्य देवी देवता, यक्ष-यक्षी की स्वतंत्र मूर्तियाँ २-३ ही हैं । अहारजी, देवगढ़, जतारा एवं सीरोन में जैन प्रतिमा के साथ प्रतिमा निर्माता श्रेष्ठी के बिम्ब बनाये गये हैं । जबकि खजुराहो एवं नवागढ़ में मंदिर प्रतिमा निर्माता श्रेष्ठियों के पृथक बिम्ब भी प्राप्त हैं।

नवागढ़ में श्रेष्ठी पाहल, श्रेष्ठी महीचन्द्र एवं श्रेष्ठी रासल के बिम्ब स्वतंत्र रूप में प्राप्त हुए हैं । इन सभी के द्वारा विराजित प्रतिमाओं के अभिलेख भी प्राप्त होते हैं ।

नवागढ़ के आसपास के पुरातात्त्विक स्थलों के अन्वेषण से और भी कई रहस्य उद्घाटित हो सकते हैं ।

संत समागम – नवागढ़ क्षेत्र पर मुनिश्री आदिसागर जी महाराज, नेमिसागर महाराज के आगमन के पश्चात् आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ससंघ मड़ावरा से बिहार करते हुए नवागढ़ पधारे, उनका रात्रि विश्राम कमरों के अभाव में चबूतरे पर हुआ । सभी को इस घटना ने अत्यन्त दुःखी कर दिया और क्षेत्र पर विकास कार्य आरंभ हुआ । इसी का सुफल था कि आ. देवनन्दि जी आ. विरागसागर जी, आ. पद्मनंदि जी, आचार्य उदारसागरजी, आचार्य वर्धमानसागर जी, आचार्य ज्ञानसागर जी,

आचार्य विशुद्धसागर जी, आचार्य विभवसागर जी, आचार्य विनिश्चयसागर जी, मुनिश्री समयसागर जी, मुनिश्री सुधासागर जी, मुनिश्री अभयसागर जी, मुनिश्री समतासागर जी सहित आर्यिका अनंतमती, विज्ञाश्री, गुरुमती, प्रशांतमती, आर्यिकारत्न ज्ञानमती, विनतमती आदि कई आर्यिका संघ माताजी का ससंघ प्रवास नवागढ़ की पुण्यधरा पर हुआ है ।

पंचम गजरथ महोत्सव – जिनालय की कलात्मक पाषाणयुक्त परिक्रमा निर्माण, व्यवस्थित अतिथिकक्ष, सभी वेदियों का पुनर्निर्माण भगवान बाहुबली के साथ भगवान आदिनाथ भगवान एवं भरत भगवान की प्रतिष्ठा का समस्त कार्य संयोजन ब्र. जय निशांत भैयाजी के निर्देशन में होना निश्चित हुआ । जिससे क्षेत्र का सौंदर्यीकरण, वास्तु एवं आगमानुसार किया जा सके। पूरे क्षेत्र की एकरूपता एवं भव्यता हेतु ब्र. जय निशांत भैया ने पूरे क्षेत्र में मेहरावों का निर्माण शिखर एवं संपूर्ण क्षेत्र का एक रंग, जिनालय एवं पूरे क्षेत्र परिकर में मंदरियों का निर्माण कराकर इसको नया रूप प्रदान किया ।

पंचकल्याणक की तैयारी में क्षेत्रीय समाज का उत्साह एवं सहयोग प्रशंसनीय रहा । आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में समारोह अध्यक्ष श्री आजाद जैन बीड़ी वाले इन्दौर, कार्यकारी अध्यक्ष सिं. महेन्द्र कुमार जी बड़ागाँव, मंत्री श्री प्रवीण कुमार जी दैनिक विश्व परिवार झांसी ने ब्र. जय निशांत भैयाजी के निर्देशन एवं पं. गुलाब चन्द जी 'पुष्प' के संरक्षण में १४ जनवरी से १९ जनवरी २०११ तक आदर्श पंचकल्याणक का गौरव प्राप्त कर बुन्देलखंड की गजरथ परम्परा में अविस्मरणीय इतिहास का सृजन किया ।

षष्ठ पंचकल्याणक – कलात्मक, बंसी पहाड़ पाषाण निर्मित मानस्तम्भ एवं पंचबालयति जिनबिम्बों का पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में २१ जनवरी से ४ फरवरी २०१६ में ब्र. जयकुमार निशांत भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व

में सम्पन्न हुआ । महोत्सव की अध्यक्षता श्री राजकुमार जी जड़ी-बूटी महामंत्री श्री प्रवीण जैन दैनिक विश्व परिवार ने की ।

भगवान अरनाथ स्वामी का प्रथम भव्य पंचकल्याणक था जिसमें जैन-अजैन सभी ने उत्साहपूर्वक सहभागिता प्रदान करके इसे अविस्मरणीय बनाया । समारोह के पश्चात् नवागढ़ ग्राम के सभी वृद्ध पुरुष एवं महिलाओं का अभिनंदन किया गया ।

विकास के बढ़ते आयाम – नवागढ़ क्षेत्र की कीर्ति भारतवर्ष के भक्तों को आमंत्रित करने लगी, दर्शनार्थियों की बढ़ती हुई संख्या तथा दुःख निवारण हेतु होने वाले विधान अनुष्ठानों की होड़ ने समिति को सोचने पर मजबूर कर दिया, कि ६ फुट गर्भगृह में ऐसे अनुष्ठान संभव नहीं हैं ।

कार्य योजना पर विचार-विमर्श होता रहा । दिल्ली के इंजीनियर प्रमोद जैन को इस कार्य का भार सौंपा गया ।

मानस्तंभ शिलान्यास :- २६ अप्रैल शुक्रवार २०१३ मंगल सान्निध्य मुनि श्री विनिश्चय सागर जी महाराज ससंघ

पंचबालयति शिखर शिलान्यास कर्ता:- २३ जनवरी २०१३

सौजन्य :- श्री सुमतचंद्र निर्मल कुमार जैन बैटरी वाले, आगरा

श्री कुंथुनाथ शिखर शिलान्यास कर्ता :- २३ जनवरी २०१३

सौजन्य :- श्री सिंघई शिखर चन्द्र जी, आगरा

शिलान्यास कर्ता :- श्री रमेश चन्द जी जैन, आनंद जैन, अनुज जैन, अखलेश जैन, अंकुश जैन एवं परिवार बण्डा वाले, सागर

भोजनालय शिलान्यास :- २६ अप्रैल २०१३

शिलान्यास कर्ता :- श्री अनिल कुमार जैन साड़ीवाले, दरियागंज, दिल्ली

भौंयरा विस्तार शुभारंभ :- २६ अप्रैल २०१३

सौजन्य :- श्री नरेन्द्र कुमार जैन, अनुपम जैन, संयम जैन लोक विहार, दिल्ली

त्यागीव्रती भोजनशाला शुभारंभ : २६ अप्रैल २०१३

सौजन्य : - श्री विजय कुमार जैन नोयडा ;उ.प्र.

संग्रहालय शुभारंभ :- ३१ मार्च २०१४, मंगल सान्निध्य : आ. श्री विभव सागर जी महाराज, आर्यिका श्री विशाश्री माता जी ससंघ

शिलान्यास कर्ता :- श्री राजपाल जैन, राजबहादुर जैन, राजेन्द्र कुमार जैन, राजदीप जैन, सुशील जैन बटन वाले, दिल्ली

पंचबालयति गर्भगृह शिलान्यास :- ३१ मार्च २०१४

सौजन्य :- सकल दि. जैन समाज फिरोजपुर झिरका, हरियाणा

पंचबालयति श्रृंगार मण्डप शिलान्यास :- ३१ मार्च २०१४

शिलान्यास कर्ता :- श्री सुनील कुमार प्रवीण कुमार सर्राफ, मेरठ

पंचबालयति वेदी शिलान्यास कर्ता :- श्री प्रमोद कुमार, पीयूष जैन, ईशान जैन बारदाना वाले, सागर

समय-समय पर होने वाले अनुष्ठानों में श्रावकों की उपस्थिति ने बड़े भोजनालय तथा संग्रहित पुरासम्पदा के संरक्षण हेतु संग्रहालय निर्माण पर भी मंथन किया । आचार्य विशुद्ध सागर जी, आचार्य विभवसागर जी, आचार्य वर्द्धमान सागर जी, मुनिश्री अभयसागर, मुनि श्री सुधासागर जी सभी का आगमन क्षेत्र पर विभिन्न अवसरों पर हुआ उन सबका महनीय

परामर्श मिला । इंजीनियर एस.एम. जैन सोनीपत, डॉ भागचन्द्र भागेन्दु दमोह, डॉ कस्तूरचन्द्र 'सुमन' श्री महावीर जी, डॉ. ए.पी. गौड़ झांसी के परामर्श से कार्य की विस्तृत रूपरेखा बनाई गई। ब्र. निशांत भैया जी की संकल्पशक्ति ने वास्तु दोषों का निवारण करते हुए क्षेत्र का संवर्धन इंजी. सुरेन्द्र कुमार जी एवं इंजी. शिखर चन्द्र सिंघई के सहयोग से सागर टीकमगढ़ मार्ग का प्रवेशद्वार, दो शिखरों के निर्माण तथा सुन्दर मनोज्ञ शिल्पकला की उत्कृष्टकृति मानस्तम्भ का निर्माण कराकर सभी को अचंभित किया है ।

व्रती आश्रम का शुभांरभ – देवगढ़, सैरौन, थूबौन ,चंदेरी, ललितपुर से पपौरा, अहार, द्रोणगिरि, नैनागिरि का मुख्य मार्ग नवागढ़ (नंदपुर) होकर ही जाता है, अतः अधिकांश साधु संत एवं आर्यिका माता जी वन्दनार्थ आते हैं । पूज्य पुष्पजी ने इस पर विशेष विचार करके समिति के समक्ष व्रती आश्रम के शुभारम्भ का प्रस्ताव रखा । समिति के समस्त पदाधिकारियों ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान की । तदनुसार दिनांक १७ फरवरी २००६ को व्रती आश्रम का शुभारम्भ करके त्यागीव्रती एवं महाव्रतियों की आहार चर्या योग्य व्यवस्था क्षेत्र पर आरंभ हो गयी ।

क्षेत्र पर आने वाले साधुओं को आहार-विहार व्यवस्था में भाई अनंदीलाल जी लुहर्रा , कपूरचन्द्र जी डूडा एवं मैनवार समाज सदैव तत्पर रहते हुए सौभाग्यवर्धन करते हैं ।

आहार देने हेतु मंदिर के पीछे आहार कक्ष के निर्माण का प्रस्ताव रखा गया, जिसे व्यवस्थित बनाने हेतु कच्चे कमरों को हटाकर पुनर्निर्माण का प्रस्ताव रखा गया । जिसे व्यवस्थित बनाने हेतु कच्चे कमरों को हटाकर पुनर्निर्माण श्रद्धालुओं के सहयोग से शुरू किया गया ।

जीर्णोद्धार – क्षेत्र का निर्माण क्रमशः वृद्धिंगत होता गया ।

भगवान अरनाथ स्वामी के मूल जिनालय में प्रवेश करने वाली सीढ़ी हटाकर उसे उत्तर एवं दक्षिण दिशा दोनों ओर से सीढ़ी निर्माण करके ऊपर जाने की सीढ़ी को व्यवस्थित किया गया । तथा मूलनायक भगवान एवं शांतिनाथ भगवान् की दृष्टि को बाहर निकालने का कार्य भी श्रद्धेय पुष्प जी के परामर्श से किया गया ।

संतों के निरन्तर आगमन से क्षेत्र की अव्यवस्थाओं की ओर ध्यान आकर्षित हुआ । वेदियाँ मात्र प्लेटफार्म रूप में बनी थीं । नीचे स्थान खाली था, प्रतिमाएं दीवार से सटाकर रखी गयी थीं । इस प्रतिकूलता को त्वरित निर्णयानुसार अनुष्ठान विधि सम्पन्न करके सभी स्थानों पर वेदियाँ निर्मित की गयी । इसका सौजन्य श्री आर. के. जैन पुष्पा जैन श्री सी. एल. जैन, ऊषा जैन , नितिन जैन-रचना जैन राजस्थली अपार्टमेन्ट दिल्ली, श्री प्रदीप भदौरा-संध्या भदौरा टीकमगढ़, सेठ हलकाई लाल जी मैनवार, श्री एम.पी.जैन-सीता जैन अग्रवाल मेटल्स रेवाड़ी, श्रीमती रतनदेवी ध.प. दीपचंद सुपुत्र डॉ. ज्ञानचंद-प्रभा जैन, इंजी अमित जैन, डॉ. अतुल जैन घुवारा को प्राप्त हुआ। जिससे इसे देश के तीर्थ स्थानों में सम्मलित होने का गौरव प्राप्त हुआ । श्रावकों के आवागमन एवं संतों का समागम निरंतर बढ़ता गया । कई परिवार विधान अनुष्ठान करके समर्पित होने लगे। भगवान् अरनाथ स्वामी का जिनालय अत्यंत संकीर्ण लगने लगा । नवनिर्माण को हटाकर भौंयरे के विस्तार करने में सभी ने विरोध व्यक्त किया । तब इंजीनियर प्रमोद जी दिल्ली, इंजीनियर एस. एम. जैन सोनीपत से परामर्श किया गया । मंदिर एवं गर्भगृह को छेड़े बिना भोंयरे के विस्तार का अकल्पनीय कार्य कैसे किया जाये वास्तुविदों वरिष्ठ अनुभवी व्यक्तियों के साथ कई बैठकों के पश्चात् मंदिर के नीचे खोदकर बीम या गार्डर पर मंदिर को स्थिर करके इस स्थान को विशेष उपकरणों के प्रयोग के बिना ही धीरे- धीरे खोदने का कार्य का निर्णय लिया गया ।

इस कार्य को श्री नरेन्द्र जैन श्रीमती रीता जैन, पुत्र अनुपम जैन, श्रीमती मीनाक्षी जैन लोक विहार दिल्ली, श्री ए.पी. जैन श्रीमती वीणा जैन अजय जैन दरियागंज दिल्ली, श्री हुकुमचन्द जिनेश कुमार जैन लार, टीकमगढ़ के सहयोग से पूरा किया गया ।

वास्तुविदों द्वारा बताये गये वास्तु दोषों को हटाने के लिए ईशान दिशा में हेण्ड पम्प तथा सर्वतोभद्र मानस्तंभ के निर्माण का निर्णय लिया गया । तदनुसार श्री रमेश चंद्र जी श्रीमति ममता जैन बंडा, सागर ने मानस्तम्भ निर्माण कराने का संकल्प किया ।

कलात्मक संग्रहालय के मुख्य द्वार निर्मित कराने का सौभाग्य श्री निर्मल जैन झांझरी एवं जिनेन्द्र जैन झांझरी डीमापुर ने प्राप्त किया ।

मूलनायक गर्भ गृह के बाहर भौंयरे को विशेष रूप देने के लिये मुख्य द्वार एवं चक्रवर्ती वैभव के कलात्मक एवं मनोज्ञ भाव निर्मित कराने की योजना समिति ने रखी । जिसका गौरव श्री महेशचंद्र जैन श्रीमती स्नेहलता जैन पुत्र विवेक - श्रीमती चारू जैन, चि. अक्षत - कु. कृतिका जैन, राजस्थली अपार्टमेन्ट पीतमपुरा दिल्ली एवं श्रीमती नीरु जैन राजीव जैन भोगल दिल्ली ने प्राप्त किया ।

श्रद्धालुओं के द्वारा आयोजित विधानों की संख्या को देखते हुये लघुकाय सामग्री कक्ष को पूर्ण सुविधायुक्त बनाने तथा कार्यालय को आधुनिक रूप देने की आवश्यकता महसूस हुई । पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की तिथि २६ जनवरी से ४ फरवरी २०१६ निश्चित की गई, इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुये कार्य योजना में श्री महेशचंद जी, नवीन कुमार जी अर्जुन रोड़ गुड़गाँव ने सामग्री कक्ष एवं श्रीमती गुणमाला जैन धर्मपत्नि स्व. अमृतलाल जैन, श्रीमती नीलम जैन- पवन जैन, श्रीमती प्रीति जैन - राजीव जैन, श्रीमती आस्था- अभिषेक जैन टीकमगढ़ ने कार्यालय निर्मित कराने का

सौभाग्य प्राप्त किया । संग्रहालय में संगृहीत विशेष पुरासम्पदा के संरक्षण पर पुरातत्व वेत्ताओं ने रासायनिक संरक्षण एवं संग्रहालय निर्माण को अनिवार्य बताया । इस पुनीत कार्य के संपादन हेतु श्री राजपाल-सुधा जैन, राजेन्द्र-वीणा जैन, रायबहादुर-उषा जैन, राजदीप-सुनीता जैन, सुशील - सुनीता जैन, रचित-रागिनी जैन शालीमार बाग बटन वाले दिल्ली ने सहर्ष पूर्ण कराया ।

पूजा एवं विधानकर्ताओं की बढ़ती हुई श्रद्धा एवं विश्वास के कारण क्षेत्र पर नियमित अन्तराल से श्रद्धालुओं का आना जाना निरन्तर बढ़ता गया, अतएव समिति के द्वारा क्षेत्र पर सभी के शुद्ध भोजन हेतु एक आहारशाला के संचालन का भाव जागृत हुआ । जिसे मूर्तरूप देने में उत्तरांचल तीर्थ क्षेत्र कमेटी ,श्री वकीलचंद जी, संजीव जैन एवं अर्हम जैन कृष्णानगर दिल्ली, श्री सुशील जैन-ममता जैन, गाजियाबाद, श्री प्रेमचंद-सावित्री देवी जैन, ईस्ट ऑफ कैलाश नई दिल्ली का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

नवागढ़ क्षेत्र मुख्य मार्ग पर नहीं होने से और मुख्य मार्ग से पृथक् रास्ता होने के कारण नवागढ़ का भाव लिये पधारने वाले श्रद्धालु प्रायः मुख्य मार्ग से आगे निकल जाते थे। उन्हें आभास ही नहीं होता था कि इस मुख्य मार्ग के आसपास कोई इतना महान् और प्राचीन क्षेत्र विद्यमान हैं। इसीलिये मुख्य मार्ग से नवागढ़ जाने के लिये एक बृहद् द्वार का निर्माण श्रीचमनलाल जी- श्रीमती अनीता जी, श्री रॉबिट जैन- श्रीमती हिमानी जैन, श्री सनत कुमार-रूचि जैन, मिताली जैन, अक्षत जैन, प्रासुक जैन, प्रगति जैन कैलाश नगर दिल्ली वालों ने इस कार्य को सम्पादित कराकर श्रद्धालुओं के लिये अद्वितीय कार्य किया है एवं श्रद्धालुओं को भटकाव की स्थिति से मुक्ति मिल गई ।

खनन से प्राप्त अतिशयकारी पूज्य प्रतिमाएँ

मूलनायक भगवान श्री अरनाथ स्वामी - तीन हाथ (४.६) कायोत्सर्ग मुद्राधारी देशी पाषाण की मूर्ति पर पन्ना रत्न से की गयी ओपदार पालिस की चमक आज भी विद्यमान है। मूलनायक रूप में विराजित अरनाथ भगवान का आभामंडल अतिसादा पर ऊपर से खंडित है । गुच्छकों के माध्यम से निर्मित केशावलि में दोनों ओर पड़ी हुई गुलकें, भोंहों के कमान, विशाल नेत्र, मनोज्ञ नासाग्रदृष्टि और होंठो के सौष्ठव के साथ ठोड़ी की आकृति से निर्मित मनोहारी, वीतरागता इस मूर्ति की विशेषता है।

ग्रीवा की रचना, वक्षस्थल का अनुपात, कलात्मक श्रीवत्स, स्तन भाग विशिष्ट नाभीयुक्त उदर की रचना, कमर की कमनीयता एवं पेडू की रेखाएँ अत्यंत दर्शनीय हैं । हाथ एवं जंघा की सुडोलता, हथेलियों में कमलाकृति और अंगुलियों में विशिष्ट वैचित्र् जो १२ वीं सदी की प्रतिमाओं में प्राप्त होता है चित्ताकर्षक हैं ।

भगवान के पार्श्व भाग में उत्कीर्ण इन्द्रों की सुकुमारता तथा नीचे प्रतिष्ठित श्रावक-श्राविकाओं की मुद्रा से प्रतीत होता है मानो वह प्रभु शरण पाकर धन्य-धन्य हो गये हों । आसन पर निर्मित मीन चिन्ह् आकृति अद्भुत एवं आकर्षक है ।

पार्श्वनाथ भगवान - देशी पाषाण से निर्मित बिम्ब जिसके सिंहासन पर अंकित दो अष्टापद , मध्य में नाग की पूँछ से चिन्ह् अंकित कर उसकी विशेष कुंडली से आसन निर्मित करने वाली सप्त फणावली ने बिम्बाकर्षण को बढ़ाया है । पद्मासन विराजित पार्श्वनाथ भगवान सर्वांग सुन्दर हैं । केशगुच्छ, विशाल मस्तक सहित मुखारविन्द् के भाव अत्यंत

आकर्षक हैं । फणावली के ऊपर दोनों ओर दो-दो अरिहंत बिम्ब इसे पंचबालयति घोषित करते हैं । दोनों पार्श्वों में चँवरधारी इन्द्र एवं उनके ऊपर पुष्पमाल लिए देवगण तथा मृदंगवादक अत्यंत शोभायमान हैं ।

शतफणी पार्श्वनाथ भगवान - सफेद संगमरमर से निर्मित अत्यंत साधारण आसन पर पद्मासन मुद्रा में विराजमान पार्श्वनाथ भगवान का अंग विन्यास, लम्बायमान कर्णाकृति, विशाल नेत्र एवं दोनों कंधों से उठे हुए सौ फणों की आकृति में चुम्बकीय आकर्षण है।

भगवान महावीर - देशी पाषाण से निर्मित एक फुट पद्मासन बिम्ब जिसका आसन दो शेरों से अंकित है । विशेष पद्मासन मुद्रा शारीरिक पुष्टता तथा प्रसन्न मुखमुद्रा अनायास आकर्षित करती है । पार्श्वभाग में चँवरधारी, पुष्पमाल सहित इन्द्रों के साथ एक-एक पद्मासन तथा खड्गासन बिम्बाकृति दर्शनीय है । इस लघुकाय बिम्ब में त्रिछत्र एवं उपरिभाग में विराजित मृदंग वादक बिम्ब को पूर्णता प्रदान करते हैं ।

ताम्र पार्श्वनाथ भगवान - संवत् १५८६ में प्रतिष्ठित बिम्ब अत्यंत प्रभावशाली है । पीतल के समचौकोर आसन जिस पर चारों ओर प्रशस्ति उत्कीर्ण है । सामने की ओर धरणेन्द्र एवं पद्मावती अपने वाहन मयूर और कूर्म सहित विराजमान हैं । आसन से ऊपर कमलाकृति पर तांबे के पार्श्वनाथ भगवान् विशेष आसन जिसमें केवल नितम्ब भाग आसन पर है, शेष जंघा एवं घुटने आसन से बाहर हैं ,जो भगवान के अधर विराजमान होने का प्रतीक है शोभायमान है।

भगवान का शारीरिक विन्यास एवं विशिष्ट मुखाकृति चित्ताकर्षक है। सुन्दर कलात्मक नाग कुण्डली बिम्ब के पीछे शोभायमान होकर नौ फणों में परिवर्तित हुई है । विशेष फणावली के मध्य बिम्ब की छवि अत्यंत मनोहारी है ।

लघु पार्श्व जिनबिम्ब – पीतल धातु से निर्मित मात्र डेढ़ इंच अवगाहना वाले पार्श्व बिम्ब के आसन पर प्रतिष्ठा संवत् १५४८ स्पष्ट अंकित है। पद्मासन, स्पष्ट मुखाकृति एवं सातफण वाले लघुकाय बिम्ब की प्राचीनता तथा इतने बड़े टीले की खुदाई में डेढ़ इंच बिम्ब का मिलना स्वयं एक अतिशय है ।

अरहंत बिम्ब – गाढ़े हरे पाषाण ;जो काला प्रतीत होता है। निर्मित बिम्ब का शिल्प स्वयं ही प्राचीनता को उद्घोषित करता है।

भगवान चन्द्रप्रभ, संभवनाथ, विमलनाथ , धातु के अरहंत भगवान, देशी पाषाण निर्मित अरहंत भगवान वेदी में विराजमान हैं । जिनका शिल्प वैशिष्ट्य विलक्षण, आकर्षक है जो शिल्प की उत्कृष्टता प्रगट करता है।

संग्रहालय – नवागढ़ क्षेत्र के भौंयरे का टीला मानो कलावशेषों एवं पुरासम्पदा से ही निर्मित था। वह सैंकड़ों वर्ष न जाने कितने दुर्लभ, विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण शिल्पों को अपने अंदर संरक्षित किए रहा । भौंयरे के उत्खनन से प्राप्त पुरावशेष आज जिनशासन की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक धरोहर हैं ।

विशाल मकर तोरण – वरिष्ठ प्रतिमा विज्ञानी पं. नीरज जी जैन सतना के शब्दों में कलाशिल्प की अपेक्षा से संभवतः इस तोरण का स्थान न केवल यहाँ के संग्रहालय में प्रथम होगा, वरन् आसपास के अच्छे संग्रहालयों में भी सुन्दरता, वीतरागता और लालित्य का एक साथ प्रतिनिधित्व करने वाले पाषाणों में दुर्लभ ही होगा । यह किसी विशाल वेदी पर मूल नायक मूर्ति के ऊपर लगे तोरण का एक भाग है । जिस पर भगवान को कमल अर्पित करते हुए दो पुष्ट और अलंकरणों से सुसज्जित गजराज अंकित किए गये हैं। गजारूढ़ देव-देवांगनाएँ अपने हाथों में कलश और पुष्पमाला लेकर

पूजार्थ जाते हुए उत्कीर्ण किए गए हैं । हाथियों के पीछे अति सुंदर अलंकारों के बीच दोनों ओर पाँच-पाँच तीर्थंकरों का अंकन है । जिनका आर-पार शिल्प विन्यास अत्यंत विलक्षण एवं वास्तुकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है । तोरण का अंत ऊपर की ओर शिखर की तरह शिलाखंडों का अंकन करके चक्र, आमलक और कलश द्वारा बड़े लुभावने ढंग से किया गया है । नागर शैली के मंदिर एवं शिखर के सभी अवयवों को इसमें दर्शाया गया है ।

युगादिदेव – देशी पाषाण की ७.५ फुट ऊंची कायोत्सर्ग प्रतिमा जो इस क्षेत्र की प्राचीनतम कृति है । इसका कलात्मक विन्यास, केशावलि, कर्णांजलि, कंधे पर केश जटाएँ , इन्द्रादिक के खड़े होने का ढंग, इनका पहनावा इसे पूर्वमध्यकाल की कृति घोषित करता है ।

पार्श्वनाथ भगवान – पूर्व मध्यकालीन एक विशिष्टकृति पद्मासन भगवान् पार्श्वनाथ जिनकी अवगाहना ४.६ फुट है । पीठिका के ऊपर नाग

की पूछ का अंकन करके मनोहारी नाग कुंडली से आसन की रचना हुई है जो सुन्दर पृष्ठभाग बनाता हुआ, दर्शनीय फणावली से मूर्ति को वेष्ठित करता हुआ ऊपर विशाल फण रूप परिवर्तित हुआ होगा । वर्तमान में फणावली नहीं है ।

डा. मारुतिनंदनप्रसाद तिवारी, ऐमिरेट्स प्रोफेसर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के अनुसार इस बिम्ब में तीर्थंकरों की अभेदता को दर्शाया गया है । इस बिम्ब में धरणेन्द्र पद्मावती के साथ युगल चंवर धारी तथा नीचे दोनों ओर भगवान नेमिनाथ के यक्ष-यक्षी, कुबेर एवं अम्बिका का अंकन विलक्षण है ।

इससे सिद्ध होता है जैन दर्शन में सभी तीर्थंकरों को एक समान पूज्यता प्रदान की गयी है, उनमें भेद प्रभेद करना उचित नहीं है ।

पार्श्वनाथ भगवान – देशी पाषाण से निर्मित मनोज्ञ प्रतिमा जिसका विन्यास पूर्वमध्यकालीन है, अवगाहना ५ फुट है तथा आसन भी नागकुंडली द्वारा निर्मित है । इसकी फणावली एवं अंगों को ध्वस्त किया गया है । इसके बारे में पं. नीरज जी सतना ने नवागढ का इतिहास पूर्व में जो सन् १९६७ में प्रकाशित किया गया था में लिखा हैं यह प्रतिमा कुएँ की पाट पर लोगों ने शिला की तरह पाट रखी थी । प्रतिमा के नाक मुँह तथा फणावली के कारण वह हिलती-डुलती थी । अतः वह सब लोगों द्वारा तोड़ दिए गये थे जब जैन समाज को ज्ञात हुआ तो कुछ उत्साही कार्यकर्ताओं ने इसे नवागढ़ पहुँचाकर संरक्षित किया था ।

शांतिनाथ आसन – शिल्प कला की उत्कृष्ट कृति जिस पर विशेष रसायनों द्वारा पालिस किया गया है आसन पर संवत् १२०२ की प्रशस्ति उत्कीर्ण है। प्रशस्ति के मध्य क्रीड़ा करता मृग युगल अत्यंत

शोभनीय है । इस प्रतिमा की मनोज्ञता-भव्यता आतताइयों को सहन नहीं हुई , न जाने कितने टुकड़ों में इसको खंडित किया गया। इसकी अवगाहना १७ से १८ फुट प्रतीत होती है ।

शिल्पस्तंभ – ४.५ फुट ऊँचाई वाला कलात्मक शिल्पयुक्त यह स्तंभ सहज ही दर्शकों को आकर्षित कर लेता है । इसमें की गई नक्कासी विलक्षण है । इसका शिल्प विन्यास जिनालय की भव्यता, विशालता एवं समृद्धता को प्रदर्शित करता है । कैसा होगा , वह जिनालय जिसमें ऐसे शिल्प स्तंभों का प्रयोग किया गया होगा ?

मानस्तंभ – ४ फुट ऊँचे मानस्तंभ पर संवत् १२०३ आषाढ़ वदी १० की प्रशस्ति अंकित है । इसके उपरिभाग में तीन ओर तीर्थंकर बिम्ब एवं एक ओर उपाध्याय परमेष्ठी की प्रतिमाएँ हैं । अधोभाग में सुन्दर यक्षणी एवं देवांगनाएँ उत्कीर्ण की गई हैं । यह मानस्तंभ न जाने कब से सोजना ग्राम की वावड़ी में लगे हुए संरक्षण की बाट जोह रहे थे ? जिसे जैन जागृति संघ के युवाओं को १० जून २००१ संग्रहालय में सुरक्षित करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

उपाध्याय प्रतिमा – क्षेत्र से तीन कि.मी. दूर पहाड़ी पर स्थित गुफा से प्राप्त संवत् ११८८ की एक फुट अवगाहना वाली देशी पाषाण की उपाध्याय प्रतिमा सुखासन में विराजमान है । दाहिना हाथ ज्ञानमुद्रामय है, जिसमें पिच्छी दबी है । बायें हाथ में शास्त्र लिए हैं । यह कृति नवागढ़ क्षेत्र की पहाड़ियों में साधना करने वाले श्रमणों की परम्परा की द्योतक है । इसे क्षेत्र के श्री चन्द्रभान मैनेजर ने जैन पहाड़ी की उपाध्याय गुफा से प्राप्त किया था ।

श्रृंगारमय आसन– संग्रहालय में स्थित विशेष श्रृंगारमय आसन, जिसमें चंदेलकालीन शिल्प के साथ दो विशालकाय अष्टापदों के मध्य चक्र के ऊपर विराजमान चार भुजाधारी देव जो भुजाओं में दण्डधारण किए हैं, मुकुट एवं गलहार सहित दर्शनीय हैं । यह आसन भव्य कायोत्सर्ग जिनबिम्ब का आभास देता है ।

सुसज्जित उपरि परिकर – बालुआपत्थर निर्मित विशाल प्रतिमा का उपरि भाग तीन छत्र युक्त है, जिसमें मृदंग वादक, कलश लिए सुसज्जित गजयुगल एवं गजारूढ़ पुष्पमालाधारी अत्यंत आकर्षक हैं। उनके ऊपर पंच अरहंत बिम्ब शिखराकृति रूप में उत्कीर्ण किए गये हैं । कलात्मक शीर्षभाग शिखर युक्त है, यह संग्रहालय की विशिष्ट कृति है ।

प्रतिहारकालीन आदिनाथ – स्तम्भसहित आदिनाथ बिम्ब पद्मासन में विशेष आसन पर विराजित है, इसका मूर्ति शिल्प, केशविन्यास प्रतिहारकालीन है ।

यह शिल्प ऊमरी ग्राम के चर्मकार के आँगन में दबा था । जिस पर वह अपने औजारों पर धार लगाता था । तथा पानी भरने के बर्तन रखता था । पं. नीरज जी जैन सतना के मित्र श्री पन्ना लाल जी इलाहाबाद को इसमें एक फूल नजर आया, जिसे उखाड़ने पर यह दुर्लभ मनोज्ञ बिम्ब प्राप्त हुआ ।

महावीर प्रतिमा – हाथ एवं शिर विहीन भगवान महावीर की प्रतिमा जिस पर संवत् ११९५ की प्रशस्ति है । यह २ फुट ऊंची पद्मासन मुद्रा में काले पाषाण पर विशेष रसायनों से की गयी ओपदार पॉलिस की सुन्दरतम कृति है । जिसके वक्षस्थल, उदर, कटि प्रदेश का विशेष सौष्ठव इतना मनोज्ञ एवं आकर्षक है कि आंखें हटना ही नहीं चाहती । आसन पर उत्कीर्ण प्रशस्ति के ऊपर बायीं ओर सिंह की विशेष आकृति तीर्थंकर बिम्ब की भव्यता को प्रदर्शित करती है । यह बिम्ब भौंयरे की दीवार से १८ मई १९६१ को प्राप्त हुआ था ।

अकलंक निकलंक –एक पाषाण खण्ड पर अग्रज एवं अनुज का शिल्पांकन अद्भुत है। राजकुमार युगल का विशिष्ट अलंकरण एवं उत्तरीय विलक्षण है, सिर एवं पाद विहीन इस कृति में अग्रज का बायें हाथ में लम्बशास्त्र एवं दायें हाथ में कलम शोभायमान है, जिससे यह बिम्ब राजकुमार अकंलक एवं निकलंक का सिद्ध होता है । जो नंदपुर की प्राचीन गुरुकुल परम्परा के साक्षी है ।

पद्म शिला – भूमि से १०–१२ फुट नीचे भौंयरे में जैन धर्म के १८ वें तीर्थंकर अरनाथ स्वामी की अतिशयकारी कायोत्सर्ग प्रतिमा सैकड़ों वर्ष संरक्षित करने वाली पद्म शिला त्रिस्तरीय पद्म पुष्प जिसके चारों कोनों पर कीर्तिमुख शोभायमान हैं । इसके चारों ओर चतुष्कोण एवं गोल आकृतियाँ उत्कीर्ण है ।

आम्रगुच्छ – जैनधर्मानुसार तीर्थंकर भगवान के केवलज्ञान प्राप्त करते ही गुरुत्वाकर्षण से छूटकर ५ हजार धनुष ऊपर पहुंच जाते हैं। देवकृत १४ अतिशयों के अन्तर्गत विशेष अतिशय असमय में षट् ऋतुओं के फल फूल लगने को दर्शाता है, जो आम्रगुच्छों के रूप में तीन फलक में सुशोभित है ।

गुप्तकालीन कायोत्सर्ग मुद्रा – फाइटोनी पहाड़ी के निकट जैन पहाड़ की साधना गुफा में बायीं दीवार पर तीसरी सदी में उत्कीर्ण साधु की कायोत्सर्ग आकृति यहाँ तीसरी-चौथी सदी से दिगम्बर जैन सन्तों के आवागमन की साक्ष्य है। इसी गुफा में एक चट्टान पर उत्कीर्ण युगल चरण चिन्ह दिगम्बर सन्तों की साधना स्थली का साक्ष्य है ।

संतशयन शैलाश्रय – जैन पहाड़ी की कच्छप शिला के आधार में भित्ती चित्रों के अंकन के पास, संत शयन शैलाश्रय है, इसकी ऊपरी सतह सन्तों के वर्षों से शयन करने से अत्यंत चिकनी हो गयी है । यह स्थल संत साधना एवं आवागमन का हजारों वर्ष प्राचीन साक्ष्य है ।

पाषाण निर्मित शयन स्थल – साधना गुफा से आगे चट्टान के अधोभाग में इस प्रकार का प्राकृतिक स्थान है जहाँ किसी के आभास में आये बिना आराम से निर्भय होकर शयन किया जा सकता है ।

चंदेल बावड़ी – नवागढ़ क्षेत्र की पूर्व दिशा में एक किलो मीटर की दूरी पर ईंटों द्वारा निर्मित ३०-३५ फुट गोलाकार में फैली प्राचीन बावड़ी जिसमें नीचे तक पहुँचने के लिए पाषाण खंडों की व्यवस्थित सीढ़ियाँ निर्मित हैं । वर्तमान में यह मिट्टी से भर गई है, जो जीर्णता एवं झाड़ियों के कारण ध्वस्त होने की कगार पर है ।

रहस्यमय मंदिर – बावड़ी के निकट ८० फुट ऊँचे विशाल तेंदू वृक्षों के मध्य विशेष शिलाखंडों एवं अमलसार के खंडित अवशेषों सहित यह स्थान न जाने कितने रहस्यों को समेटे है ? यह खोज का विषय है, इन स्थानों पर ग्रामवासियों की अनन्य श्रद्धा है ।

नवागढ़ क्षेत्र में मंदिर निर्माता श्रेष्ठी – चंदेल शासन में जैनों के वर्चस्व का उदाहरण है । नवागढ़ क्षेत्र, यहाँ मंदिर निर्माता श्रेष्ठी साबु पाहल, महिचंद एवं रासल की पृथक मूर्तियाँ हैं । जबकि कला क्षेत्र देवगढ़ सिद्धक्षेत्र अहारजी, जतारा में श्रेष्ठियों की मूर्तियाँ भगवान की प्रतिमा के साथ ही उत्कीर्ण की गयी हैं । इससे सिद्ध होता है प्राचीन नदंपुर वर्तमान नवागढ़ में साबु पाहल, साबु महिचंद एवं साबु रासल के साथ लषम् रामचन्द्र, बील्हा, सलष आदि श्रेष्ठियों ने मंदिर बनवाकर जिनशासन की गौरव गरिमा को वृद्धिगत किया है ।

साबु पाहल – नवागढ़ में चंदेल शासक धंगदेव के शासनकाल में राज्यमान श्रेष्ठी पाहल की मूर्ति, वज्रासन में माला, उत्तरीय वस्त्र एवं दाढ़ी मूंछ सहित खजुराहो में संगृहीत पाहल की मूर्ति के समान है । जिससे सिद्ध होता है साबु पाहल ने नवागढ़ के साथ-साथ खजुराहो में भी मंदिरों का

निर्माण संवत् १०११ में कराया था ।

साहु महिचंद – नवागढ़ की प्रशस्तियों एवं बगाज टोरिया पर स्थित श्रेष्ठी साबु महिचं की मूर्ति से सिद्ध होता है । आपके द्वारा नवागढ़ में संवत् ११६५ ई. में तथा खजुराहो में संवत् १२१५ ई. में मंदिर निर्माण कराया था ।

ढाई फुट अवगाहना वाली विलक्षण एवं अद्भुत् है । इसके सर्वांग श्रृंगार एवं खड़े होने की कमनीय मुद्रा एवं दुपट्टे की लहरिया से किसी देवांगना का आभास होता है । जबकि वक्षस्थल , विशाल दाड़ी, मूंछ, कर्ण, कुंडल से यह शक्तिशाली पुरुषाकृति है । इसके सिर के दाहिने ओर पद्मासन संपूर्ण जिनबिम्ब सहित है । यह बिम्ब पहाड़ी पर स्थित है, जिसने हजारों साल पहले समृद्धशाली नवागढ़, नंदपुर में विशाल जिनालय का निर्माण कराया । जिसे ग्रामवासी बगाजमाता के रूप में पूजते हैं ।

साबु रासल – नवागढ़ में चार जिनालयों के प्रतीक मानस्तम्भों के अनुसार एक जिनालय का निर्माण संवत १२०३ में आषाढ़ वदी १० को श्रेष्ठी रासल द्वारा कराया गया । इसी संवत् में अन्य जिनालयों का निर्माण भी किया गया था । इतिहास एवं संस्कृति की धरोहर का अन्वेषण अभी होना शेष है ।

नवागढ़ नंदपुर के प्रागैतिहासिक साक्ष्य – नवागढ़ के बीहड़ में नैसर्गिक प्राचीन गुफाएँ हैं, जिनमें १९६१ में मुनि श्री आदिसागर जी महाराज (बम्हौरी वालों) ने साधना की थी । सन् १९६५ एवं ६६ में क्षुल्लक चिदानंद जी महाराज एवं ब्र. आत्मानंद जी गुढ़ा ने नवागढ़ में २ चातुर्मास किये । क्षुल्लक महाराज कभी - कभी २-३ दिन के लिए जंगलों में ध्यानस्थ हो जाते थे, ढूंढने पर भी नहीं मिलते थे । ब्र. निशांत भैया ने सरपंच रामनारायण यादव से इस तथ्य की जानकारी ली, तो उन्होने

''मटकी गुफा'' एवं कुछ अन्य गुफाओं की जानकारी दी । तब निशांत भैया ने सरपंच जी के साथ कई दिन घूमने के पश्चात् मंदिर से तीन कि. मी. दूर पहाड़ी में २७ फरवरी २०१५ को कुछ विशेष गुफाओं की खोज की है। इन गुफाओं की प्राचीनता के आकलन हेतु डॉ. स्नेहरानी जैन, डॉ. भागचन्द्र ''भागेन्दु'' डॉ. मसकूर अहमद, ब्र. जयकुमार ''निशांत'', इंजी. एस.एम.जैन ने २० मार्च २०१५ को श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के सान्निध्य में विशेष सम्मेलन एवं मंत्रणा कर विशेष अन्वेषण की रूपरेखा बनाई । श्रमणाचार्य विशुद्धसागर जी महाराज ने इन गुफाओं को आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण संतों की साधना स्थली बताया। जहाँ साधना करके कई संतों ने आत्म कल्याण कर मानव पर्याय को सार्थक किया होगा । आज भी यह गुफाएँ प्राकृतिक सौन्दर्य, शांत पर्यावरण युक्त साधना के लिए अत्यंत निरापद एवं साधना योग्य हैं ।

नवागढ़ (नंदपुर) के पुरातात्विक अभिलेखीय एवं ऐतिहासिक साक्ष्य जैन धर्म कीपुरातन परम्परा को सिद्ध करते हैं । डॉ. स्नेहरानी जैन, सर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं इंजी. एस. एम. जैन सोनीपत के अनुसार यहाँ की ग्रेनाइट की चट्टानें एवं गुफाएँ ज्वालामुखी के लावे से निर्मित है । जो लाखों वर्ष प्राचीन हैं ।

नवागढ़ में पाषाण काल से आज तक निरंतर मानव सभ्यता जीवंत रहने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं । इसमें २८ जनवरी २०१७ ई. से २७ मार्च २०१८ ई. तक प्रोफेसर गिरिराज कुमार (राष्ट्रीय महासचिव रॉक आर्ट सोसायटी आफ इंडिया, दयाल बाग इंस्टीट्यूट, आगरा द्वारा अन्वेशित पाषाण कुदालें २ लाख से ५ लाख वर्ष प्राचीन पाषाण सभ्यता का साक्ष्य हैं । ६ नवम्बर २०१६ ई. को डॉ. एस. के. दुबे राष्ट्रीय संग्रहालय अधिकारी झांसी तथा श्री नरेश पाठक पुरातत्व अधिकारी ग्वालियर द्वारा अन्वेशित पाषाण उपकरण एवं लघु पाषाण औजार १२ से १५ हजार वर्ष

प्राचीन मध्य पाषाण कालीन सभ्यता का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। डा. गिरिराज द्वारा २८ जनवरी २०१७ को अन्वेषित सिद्धों की टौरियां का रॉक कप मार्क १० हजार वर्ष प्राचीन मानव सभ्यता का साक्ष्य है। दिनांक ६ अक्टूबर २०१४ ई. को ब्र. जयकुमार निशांत महामंत्री अखिल भारतीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद् द्वारा अन्वेषित कच्छप शिला के चितेरों की चंगेर, शैलचित्र श्रृंखलाएं ६ से ८ हजार वर्ष पूर्व की विकसित मानव सभ्यता तथा मिट्टी एवं पाषाण के मनके २ हजार वर्ष से लगातार मानवीय सभ्यता के प्रत्यक्ष साक्ष्य हैं । रामनारायण यादव सरपंच द्वारा २० मार्च २०१६ को अन्वेषित उत्कीर्ण कायोत्सर्ग मुद्रा एवं चरण चिन्ह जैन संतों की गुप्तकालीन काल से नंदपुर में आवागमन के साक्ष्य हैं ।

अपूरणीय क्षति

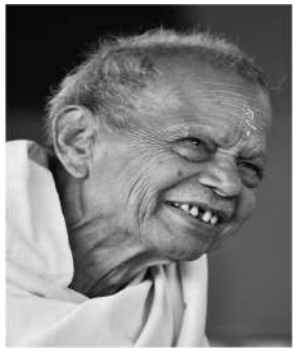

सरलतम प्रतिमाधारी 'पुष्प' जी १३ दिसम्बर २०१४ को सिद्धोदयक्षेत्र नेमावर में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से प्रायश्चित्त एवं सल्लेखना व्रत लेकर पंचबालयति मंदिर आश्रम में साधनारत थे।

दिनांक ५ जनवरी २०१५ संध्याकालीन स्वाध्याय के पश्चात् जल लेने के बाद कायोत्सर्ग कर रहे थे, अचानक उन्होंने ब्र. सुरेश मलैया एवं जिनेश मलैया को वस्त्र हटाने का संकेत किया और कायोत्सर्ग करते-करते नश्वर देह का त्याग कर गये। जिसने सुना हतप्रभ रह गया? समाधिस्थ 'पुष्प' जी का मृत्यु महोत्सव रूप अंतिम संस्कार नवागढ़ क्षेत्र की पहाड़ी पर किया गया।

८ फरवरी २०१५ समस्त भारत वर्ष एवं क्षेत्रीय समाज उनकी पावन स्मृति को अंतस में संजोये उनके सपने, क्षेत्र पर संतों का चातुर्मास एवं पंचकल्याणक को साकार करने का संकल्प लेकर पुष्प परिवार एवं क्षेत्र कमेटी के साथ श्रद्धा भाव निवेदित करती है। प्रागैतिहासिक क्षेत्र नवागढ़ (नंदपुर), जिला-ललितपुर उ.प्र. की समिति का ऐसे इतिहास पुरुष प्रतिष्ठा प्रतिष्ठापितामह को शत-शत नमन ।

:-सन्दर्भः-

१ कालंजर प्रबोध, डॉ. हरिओम तत्सत ब्रह्म शुक्ल पृष्ठ ४८

७ फलहोडी बडागांव वैभव स्मारिका, प्राचीनतम जैन तीर्थ फलहोड़ी बडागांव की पड़ताल, श्री हरिविष्णु अवस्थी पृष्ठ-५५

२ बुन्देलखण्ड का इतिहास और जैन पुरातत्व, प्रो. दिगम्बरदास जैन पृष्ठ

३ बुंदेलखण्ड का पुरातत्व, डॉ. एस.डी.द्विवेदी, पृष्ठ ६४

४ खजुराहो का जैन पुरातत्त्व, डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, पृष्ठ ४ प्रकाशकीय दशरथ जैन एवं दा अर्ली रूलर्स ऑफ खजुराहो, डॉ. शिशिर कुमार मित्र, पृष्ठ २०५.२०६

५ खजुराहो का जैन पुरातत्व डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, पृष्ठ-८

६ वही,

७ चन्देल और उनका राजत्व काल, डॉ. केशवचंद मिश्र पृ.२०२.२०३

८ जैन प्रतिमा विज्ञान, डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, प्रकाशकीय दशरथ जैन पृष्ठ २७

९ चंदेल और उनका राजत्वकाल, डॉ. केशवचंद मिश्र पृष्ठ २०३

१० इपिग्राफिया इण्डिका, खण्ड, पृ.१५२.५३ एवं जैनबलभद्र, भारत के दिग.जैन.तीर्थ तृतीय भाग, म.प्र. मुम्बई, १९७६ पृ.१४५.४६

११ राजाभोज १०१० से १०६२ के शासनकाल में उल्लेखित पाहिल तथा ११५८ ई. के लेख में उल्लिखित पाहिल पार्श्वनाथ मंदिर के पूर्वोक्त ९५४ ई. के लेख में आये पाहिल से भिन्न व्यक्ति हैं। क्योंकि

तीनों के बीच सौ बर्षों से अधिक का अन्तर है।

१२ जैन बलभद्र पूर्व निर्दिष्ट, पृ.१४२,१४६, एपिग्राफियाइण्डिका, खण्ड १, पृ. १५३, जैन ज्योति प्रसाद, पूर्व निर्दिष्ट, पृ.२२४-२६

१३ एपिग्राफिया इण्डिका, खण्ड-१, पृ.१३५-३६

१४ १. चंदेलकालीन महोबा एवं जनपद हमीरपुर और महोबा के पुरावशेष, वासुदेव चौरसिया पृ.३१

२. बुंदेलखण्ड का इतिहास दीवान प्रतिपालसिंह (चौथा भाग) पृष्ठ-१३६

१५ खजुराहों प्रतिमायें, डॉ. उर्मिला अग्रवाल, पृष्ठ ६, संदर्भ

१६ बुंदेलखण्ड का पुरातत्व, डॉ. एस.डी. द्विवेदी, पृष्ठ ६०-६१

१७ चंदेलकालीन महोबा एवं जनपद हमीरपुर और महोबा के पुरावशेष, वासुदेव चौरसिया पृ.३१

१८ स्ट.जै.आ.पृ.२३, जैन, नीरज, अतिशय क्षेत्र अहार, अनेकान्त, वर्ष १८ ,अं. ४ ,पृ.१७७-७६

१६ जैन नीरज, नवागढ़, एक महत्वपूर्ण मध्ययुगीन जैन तीर्थ,अनेकान्त, वर्ष १५, अंक ६, पृ.२७७-७८

२० चन्देलकालीन बुंदेलखण्ड का इतिहास, डॉ. अयोध्याप्रसाद पाण्डेय पृ.१७०

२१ ए.एस.आई. रिपोर्ट कनिंघम, वाल्यूम १० पृ.६८.६६

२२ जल प्रबंधन बुन्देलखण्ड के पारम्परिक जल संरचनाएं, हरिविष्णु अवस्थी पृ. ३२

२३ बुन्देलखण्ड के दुर्ग, डॉ. के.पी. त्रिपाठी पृ. १०

२४ बुंदेलखण्ड का पुरातत्त्व, डॉ. एस.डी.द्विवेदी, चित्र सं. १३

२५

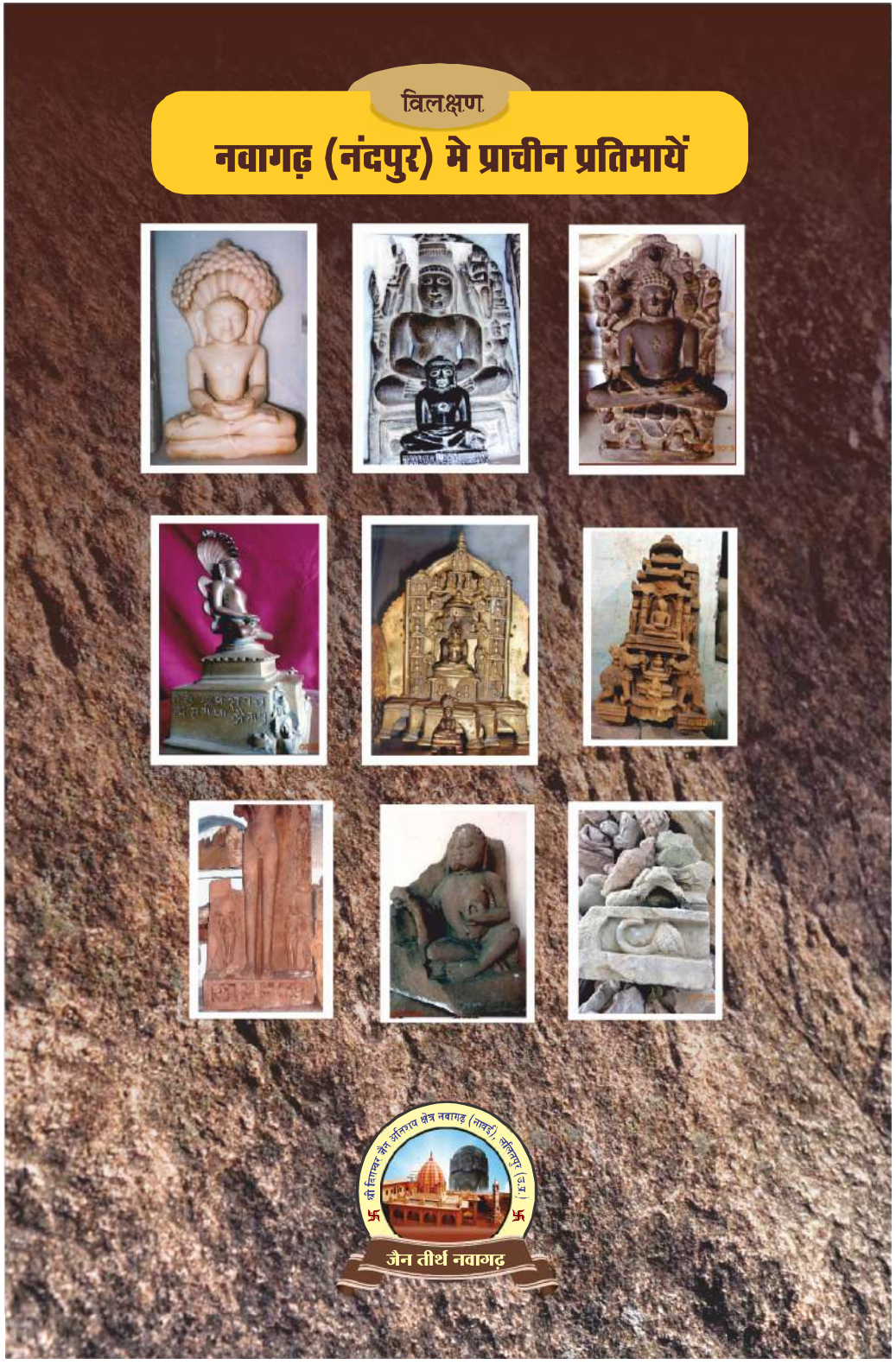

प्रागैतिहासिक

नवागढ़ (नंदपुर) मे प्राचीन गुफायें एवं शैलाश्रय

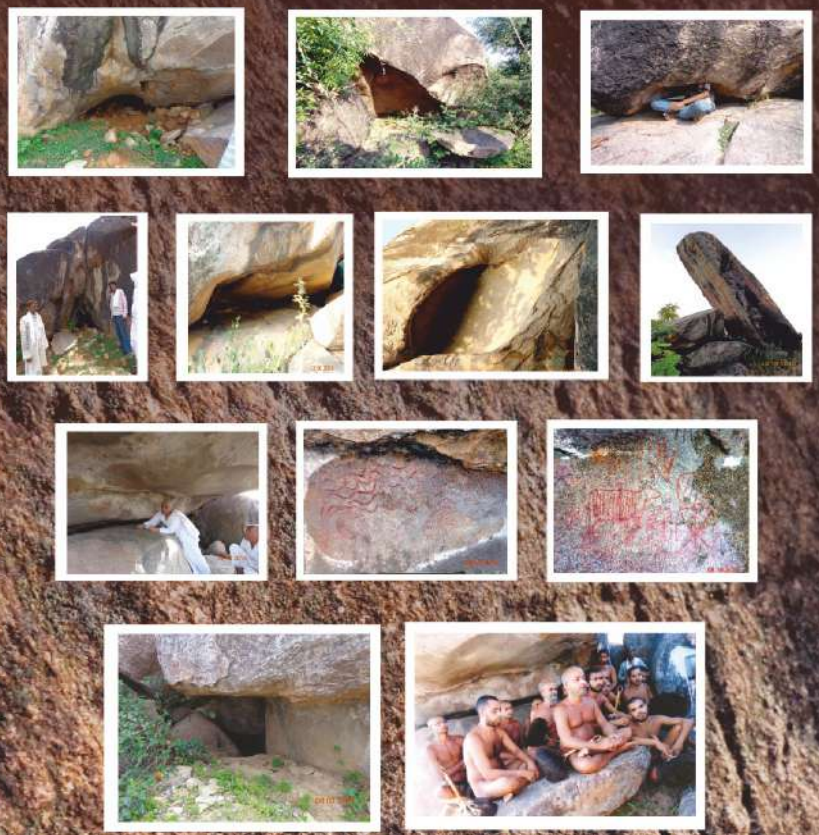

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ (नावई), ललितपुर (उ.प्र.)

जैन तीर्थ नवागढ़

Avs graphics
9893515842